शुभाशीष

परमकल्याणकारी परमपिता शिव की दिव्य वाणी को तथा आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा की नई सृष्टि रचना की श्रेष्ठ मत को लेख-कविताओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने वाली 'ज्ञानामृत' पत्रिका जन-सेवा के 47 वर्ष पूरे कर चुकी है।

सृष्टि-चक्र के सत्य ज्ञान को, राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन के अनुभवों को, सच्चाई, प्रेम, नम्रता आदि श्रेष्ठ धारणाओं को और सेवा की नवीन योजनाओं के चिंतन को अपने में समाने वाली इस पत्रिका के पाठकों की संख्या देश-विदेश में निरंतर तीव्र गति से बढ़ती जा रही है, यह हर्ष का विषय है।

तनाव, अवसाद तथा दुविधाओं से मुक्ति, पारिवारिक शान्ति, लक्ष्य के प्रति समर्पण, विचारों और चरित्र की उज्ज्वलता, कर्म और योग में संतुलन, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य जैसी उपलब्धियाँ पाठकों को प्राप्त कराते हुए यह पत्रिका जीवन-परिवर्तन का इतिहास रच रही है।

ज्ञान-दान सर्वोत्तम दान है। इस प्रभु-प्रिय, लोक-प्रिय पत्रिका द्वारा अधिक से अधिक आत्माओं को लाभ पहुँचाने की अथक सेवा आप अधिक उमंग-उत्साह से आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी शुभ भावना है।

जो भी भाई-बहनें अमूल्य चिन्तन के सहयोग से इसमें रचनायें भेजते हैं, जो इसे सुंदर रूप प्रदान कर सर्व तक पहुँचाने का कार्य करते हैं, जो इसके अध्ययन से निज तथा दूसरों की आध्यात्मिक उन्नति करते हैं, उन सभी को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी अपनी सेवायें विशेष गुणवत्ता के साथ करते रहेंगे।

वर्ष 2012-13 के प्रिय पाठकों के प्रति मेरा शुभ संदेश यही है कि व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय समाप्त करें। बुद्धि से दृढ़ संकल्प करके संस्कार बदलें, ऐसा परिवर्तन देख और कहें, इसमें बड़ा परिवर्तन है। शिवबाबा की याद और सेवा का संस्कार पक्का हो जाये। चलते-फिरते, खाते-खिलाते याद और सेवा। भूल से भी कोई दुख देने वाला वचन मुख से न निकले।

बापदादा और हम सबकी यह प्रिय पत्रिका दिनों-दिन उन्नति को प्राप्त करती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- कर्त्तव्यों का संतुलन (सम्पादकीय) 4
- बापदादा की सच्ची गोपी दीदी .6
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- हम निमित्त हैं, जिम्मेवार......10
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी.... 11
- ईश्वरीय सेवा में गीत-संगीत..13
- पतियों का पति मिला.........17
- बेहद की वैरागी (कविता) 18
- माता, संस्कार निर्माता........19
- ग्लोबल हॉस्पिटल में..........21
- दिल का हाल सुने 22
- जीवन का सार..(कविता).... 23
- सुख पॉजिटिविटी का......... 24
- वायवा नहीं, वाह-वाह 25
- तन-मन रहेगा (कविता) 26
- ईश्वर की खोज..............27
- अंतिम परीक्षा................29
- सचित्र सेवा समाचार......... 30
- सत्यों का रहस्योद्घाटन......32
- बनेंगे रूहानी नूर (कविता) ...32
- अलौकिक पिता मिल गया ...33
- प्रभु ने रखा ध्यान.............34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

कर्त्तव्यों का संतुलन

जब हम किसी भी व्यक्ति से पूछते हैं, आप कौन हैं, तो आमतौर पर व्यक्ति अपने व्यवसाय का परिचय देते हुए कहता है, मैं डाक्टर हूँ या इंजीनियर हूँ आदि-आदि। अब सोचने की बात यह है कि व्यक्ति केवल डाक्टर, केवल इंजीनियर या केवल व्यापारी तो नहीं है। वह तो और भी बहुत कुछ है। वह अपने बच्चों का पिता भी है, पत्नी का पति भी है, माता का पुत्र भी है, बहन का भाई भी है। डॉ. के पास जाता है तो पेशेन्ट भी है, यात्रा करता है तो यात्री भी है, खेल का शौकीन है और खेलता भी है तो खिलाड़ी भी है, किसी से माल खरीदता है तो ग्राहक भी है। इस प्रकार व्यापारी या डाक्टर या इंजीनियर होने के साथ-साथ अनेकानेक अन्य भूमिकाएँ भी निभाता है। कोई भी मानव केवल एक भूमिका के सहारे जीवन व्यतीत कर ही नहीं सकता। अनेक प्रकार के पार्ट सामाजिक प्राणी मनुष्य को निभाने ही पड़ेंगे।

झुकाव से पलड़ा झुक जाता है एक तरफ

अब प्रश्न उठता है कि जब एक भूमिका से काम नहीं चल सकता तो वह केवल एक भूमिका का लेबल अपने पर क्यों लगाता है। यह उसका अज्ञान भी है और अभिमान भी। उसने समाज में अपनी पहचान इसी लेबल से बना ली है। इस प्रकार के लेबल का मनुष्य की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बार-बार अपने उस व्यवसायिक नाम या पद को सुनकर उसे उस व्यवसाय से एक प्रकार का गहरा लगाव और झुकाव हो जाता है। जब झुकाव हो जाता है अर्थात् पलड़ा एक तरफ झुक जाता है तो दूसरी तरफ से उखड़ भी जाता है और वह अपनी दूसरी भूमिकाओं से लगभग उखड़ा-उखड़ा रहने लगता है, उन्हें महत्त्व कम देने लगता है, उनकी उपेक्षा करने लगता है, उनके प्रति कर्त्तव्यों का उल्लंघन करने लगता है।

फुर्सत नहीं है

कई बार देखने में आता है कि पत्नी बीमार है तो व्यवसायिक पति कहता है, ये पैसे ले लो, डाक्टर को दिखाओ, मेरे पास समय नहीं है। बच्चा यदि कहता है, पापा मास्टर जी ने आपको याद किया है तो कहता है, ये लो पैसे, फीस जमा करा दो, किताबें, कापियाँ खरीद लो, मास्टर जी से मिलने का मेरे पास समय नहीं है। बीमार बूढ़ी माँ कहती है, बेटा मेरे पास बैठ दो मिनट, तो कहता है, मां नौकर का प्रबन्ध कर दिया है, सेवा कर दिया करेगा, मुझे दुकान से फुर्सत नहीं है।

छिन जाता है सुख रूपी धन

चूंकि वह व्यापारी है, व्यापारी का लेबल उस पर लगा हुआ है, व्यापार के लाभ और व्यापार की वृद्धि के लिए 18 घंटे लगाता है और बाकी समय में भी अप्रत्यक्ष रूप से उसी का चिंतन करता है। अब सवाल उठता है कि वह पिता के रोल को, पति के रोल को, भाई के रोल को समय कब देगा। समय नहीं देता है तो पत्नी, पुत्र, भाई-बहन आदि के साथ सम्बन्धों में वो मिठास नहीं आ पाती है। वह सफल व्यापारी तो बन जाता है परन्तु पति, पिता, पुत्र, भाई आदि के रूप में असफल हो जाता है। व्यापार उसे केवल धन देता है, वह धनी तो बन जाता है परन्तु परिवारिक सुख रूपी धन उससे छिन जाता है। मन की शांति, खुशी, आनंद जो भिन्न-2 सम्बंधों से मिलना था, उससे वो वंचित हो जाता है। इसलिए अधिकतर, आनन्द और खुशी को वह ग़लत जगह खोजने लगता है। शराब, बीड़ी, सिगरेट, जुआ, ताश, सिनेमा, होटल, वेश्यागमन आदि विधियों से खुशी पाने की चेष्टा करता है परन्तु ये चीज़ें उसका स्वास्थ्य, मान, नींद और पैसा हरकर उसको और अधिक दिवालिया बना देती हैं।

आज का संसार ऐसे दिवालिया लोगों से भरा हुआ है।

सब वाहवाही करें

इस कुचक्र से निकलने का उपाय है आध्यात्मिकता। आध्यात्मिकता कहती है, **' मैं कौन हूँ ' पहले इस प्रश्न का सही-सही उत्तर जानो। मैं डाक्टर हूँ, वकील हूँ, व्यापारी हूँ– यह इस प्रश्न का सही उत्तर नहीं है। सही उत्तर है कि डाक्टर की भूमिका करने वाली मैं एक आत्मा हूँ। दिनभर में मैं अनेक भूमिकाएँ करती हूँ। हर भूमिका के साथ मुझे न्याय करना है ताकि हर रोल पर मुझे वाहवाही मिले।** पति का रोल प्ले करूँ तो पत्नी वाहवाही करे, पिता का रोल प्ले करूँ तो पुत्र वाहवाही करे, पुत्र का रोल प्ले करूँ तो माता वाहवाही करे। तब मैं सृष्टि रंगमंच का सफल कलाकार कहलाऊँगा, नहीं तो असफल कलाकार माना जाऊँगा।

विराम चिन्ह लगाना सीखें

लौकिक पढ़ाई में विराम चिन्ह का बड़ा महत्त्व है। वाक्य पूरा होने पर विराम चिन्ह लगाने से भाषा सुन्दर बनती है, पढ़ने वालों को अलग-अलग वाक्यों का अर्थ समझ में आता है, नहीं तो एक वाक्य में दूसरे के मिल जाने से सब गड़बड़ घोटाला हो जाता है। आध्यात्मिकता का भी एक सुन्दर मन्त्र है कि हर भूमिका निभाने के बाद उसे विराम चिन्ह लगा दो ताकि अगली भूमिका के साथ न्याय हो सके। व्यापारी के रूप में यदि आपकी भूमिका सायं 8 बजे पूरी हो गयी तो अब दुकान से निकलते ही उसे फुलस्टाप लगाइये और घर जाकर पिता या पुत्र रूप की अगली भूमिका निभाइये। इससे स्वयं हल्के रहेंगे, कर्त्तव्यपरायण रहेंगे, हरेक को सन्तुष्ट कर सकेंगे। इस प्रकार, **आध्यात्मिकता, कर्त्तव्य से बेमुख न करके कर्त्तव्यपरायण बनाती है। जिन सम्बन्धों को अपने से जोड़ लिया है पर उनकी सही देख-रेख नहीं होती है तो यह ऐसे ही है जैसे कि व्यर्थ की रस्सी उनके और हमारे बीच बंध गई है जिसे हम काटते भी नहीं पर सही न निभाने के कारण कहा-सुनी, मनमुटाव, अनबन, असन्तोष चलता रहता है।** यदि हम कर्त्तव्य नहीं निभाना चाहते तो रस्सी काट दें, उन सम्बन्धों को स्वतंत्र कर दें पर हम ऐसा भी नहीं करते। इस स्थिति में सम्बन्ध सुखदाई न रहकर दुखदाई बन्धन में बदल जाते हैं।

आश्रितों से निभाएँ

आध्यात्मिकता कहती है, या तो सम्बन्ध जोड़ो नहीं, यदि जोड़ते हो तो 20 नाखूनों का ज़ोर लगाकर भी निभाओ। आध्यात्मिकता का मूलमन्त्र है निभाना। अपने छोटे-से-छोटे कर्त्तव्य को भी समर्पण के साथ निभाओ। निभाना ही महानता है। आज के युग में पल में जोड़ने और पल में तोड़ने का खेल चल रहा है, यह भौतिकता की देन है। आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित सतयुगी दुनिया में हर रिश्ता टिकाऊ होगा। यादगार ग्रन्थ रामायण में एक प्रसंग आता है कि रावण से तिरस्कृत होकर विभीषण जब श्रीराम की शरण में आया तो बहुतों ने उन्हें समझाया कि इस राक्षस जाति के व्यक्ति को शरण देकर झंझट में न फंसें। पर श्री राम ने कहा, मेरी शरण या मेरे आश्रय में जो भी आ जाता है, अपना सब कुछ न्यौछावर करके भी मैं उसकी रक्षा करता हूँ।

भगवान को भी शरणागत वत्सलम् कहा गया है। आश्रित की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है। अत:हम भी उपरोक्त प्रसंग से प्रेरणा लेकर अपने आश्रितों की प्रेम से ज़िम्मेदारी उठाएँ। यदि आत्मा में शक्ति नहीं है तो आध्यात्मिकता द्वारा वह शक्ति भरें। इसका अर्थ है, परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़कर उनसे शक्ति प्राप्त करें। ईश्वरीय शक्तियाँ बहुरूपी हैं। बुराई से नाता तोड़ने की शक्ति भी वे देते हैं और अच्छाई से जुड़े रहने के लिए भी शक्ति देते हैं। इन शक्तियों का प्रयोग स्वयं पर अवश्य करके देखें। जीवन को किसी एक दिशा में अत्यधिक झुकाने के बजाए सन्तुलन से चलें। सन्तुलन अर्थात् बैलेंस। बैलेंस से चलने वाले को ही ब्लैसिंग मिलती है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

पुण्यतिथि पर विशेष...

बापदादा की सच्ची गोपी दीदी मनमोहिनी

दीदी मनमोहिनी जी का लौकिक नाम गोपी था और वे एक धनाढ्य परिवार से यज्ञ में अपनी लौकिक माँ और बहिनों के साथ समर्पित हुई थी। उनका बाबा से अटूट प्यार होने के कारण, बाबा के मुख से जो कुछ निकलता दीदी उसे प्रैक्टिकल स्वरूप में अवश्य लाती। भारत में सन् 1952 से जब सेवायें शुरू हुईं तो दीदी इलाहाबाद और दिल्ली में सेवा के निमित्त बनी और कई वर्षों तक दिल्ली, कमलानगर सेवाकेन्द्र में रहकर अपनी सेवायें देती रहीं। सन् 1965 में मातेश्वरी ने अपने भौतिक शरीर का त्याग किया, उसके बाद बाबा ने दीदी को मधुबन में अपने साथ सेवा पर रखा। दीदी यज्ञ की हर आंतरिक कारोबार को देखती और यज्ञ-वत्सों का पूरा ध्यान रखती। दीदी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि जी की अलौकिक जोड़ी के लिए प्रसिद्धि थी कि शरीर दो हैं, आत्मा एक है। दीदी ने कहा, दादी ने किया, दादी ने कहा, दीदी ने किया। दीदी-दादी ने सेवासाथियों को और आने वाले जिज्ञासुओं को मात-पिता की पूरी भासना दी। ब्रह्माकुमार राजू भाई (मुरली विभाग, मधुबन) को दीदी के संग का विशेष सौभाग्य प्राप्त है। उनकी विशेषताओं और गुणों का वे आँखों देखा तथा अनुभव किया हुआ सुंदर वर्णन कर रहे हैं – सम्पादक

सन् 1971 में प्रथम बार मधुबन आया और मुझ आत्मा को दीदी मनमोहिनी जी के सानिध्य में रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी-दादी यज्ञ में आने वाले हर पत्र का जवाब स्वयं लिखती थीं। प्रात: की दिनचर्या में मुरली क्लास के पश्चात सवेरे 10 बजे तक यही सेवा होती थी। मैंने मधुबन में आते ही हिन्दी टाइप सीखी और साथ में सिन्धी पढ़ना सीखा, इसलिए मुझे दीदी जी के साथ रहने वा पत्र लिखने का सुअवसर प्राप्त हो गया। दीदी का बाबा की मुरली से अति प्यार था, दादी जी क्लास में जब मुरली सुनाती तो दीदी मुरली सुनते-सुनते बहुत अच्छे प्रश्न निकालती और मुरली के पश्चात् सभी से प्रश्न पूछती और मुझे बुलाकर कहती, आप इन प्रश्नों को टाइप करके ले आओ, जिन्हें पत्रों का उत्तर जा रहा है उन्हें प्रश्न-उत्तर रूप में ज्ञान-रत्नों का खज़ाना भी भेज दें। इस प्रकार, अंतर्देशीय पत्र पर एक तरफ मुरली के प्रश्न-उत्तर होते और सार रूप में दूसरी तरफ पत्रों का उत्तर होता।

एक-एक का व्यक्तिगत ध्यान

दीदी जी की विशेषताओं की तो बहुत लम्बी लिस्ट है। दीदी जी ने मुझे बहुत स्नेह की शक्तिशाली पालना दी, दीदी हम सबके साथ ब्रह्माभोजन करती, ज्ञान-योग की चिटचैट करती और यदि हम कोई यज्ञ की सेवा करते तो विशेष खातिरी (आवभगत) करती। मैं एक छोटे गांव से आया था, पढ़ाई भी इतनी नहीं थी, उम्र भी केवल 15-16 वर्ष थी, दीदी जी ने अलौकिक माँ के रूप में मुझे पालना दी। अगर हम समर्पित भाई-बहनें किसी कारण से क्लास में लेट आते या नहीं पहुंचते, तो क्लास के बाद दीदी अपने कक्ष में बुलाती और पूछती कि आपकी तबियत ठीक है? नाश्ता किया है? फिर प्यार से कहती, आज सवेरे योग वा क्लास में नहीं देखा, कहाँ थे? इस प्रकार एक-एक का

व्यक्तिगत स्व-उन्नति पर ध्यान खिंचवाकर उनकी ज्ञान-योग-धारणा की नींव मज़बूत करती थी।

छोटी-छोटी बातों पर ध्यान

दीदी हर छोटी-छोटी ईश्वरीय मर्यादा पर भी ध्यान खिंचवाती थी। उस समय यज्ञ बेगरी पार्ट से पार हो रहा था, इसलिए वे यज्ञ की एक-एक चीज़ की कीमत सुनाती। कभी एक रूमाल भी गुम न हो इसलिए उस पर नाम डालना सिखाती। कमरों में कैसे सफाई रखनी है, कपड़ों को कैसे सेट करके (तह करके) रखना है (उस समय कपड़े प्रेस नहीं होते थे), फटे हुए कपड़ों को सिलाई करके पहनना, भोजन में भी कोई चीज़ व्यर्थ न जाये, ऐसे एक-एक छोटी बात पर भी दीदी सभी का ध्यान खिंचवाती।

एकव्रता, एकनामी

दीदी सदा सच्ची गोपिका बनकर, एकव्रता होकर रही। कभी किसी में आंख नहीं डूबी। हम सबको भी एक-व्रता का पाठ पढ़ाया। दीदी को हमारा साधारण बोलचाल, हंसीमज़ाक अच्छा नहीं लगता था। अगर कोई बाह्यमुखता में आकर ज़ोर से हंसता या बोलता या अकेले में छिपकर बातें करता, तो दीदी उसका तुरंत ध्यान खिंचवाती। ईश्वरीय मर्यादायें हमेशा सुनाती और कहती, सदा भाई-भाई वा भाई-बहिन की पवित्र दृष्टि से एक-दो को देखना वा व्यवहार करना। किसी में अपवित्रता का अंश भी दिखाई देता या कोई शिकायत करता तो दीदी शिकायत सुनकर उसी समय उसे अपने पास बुलाती और उसका ध्यान खिंचवाती। कभी-कभी शिकायत करने वाले को भी सामने बुलाकर उसी समय उस बात को समाप्त कर देती। इससे कभी व्यर्थ और नकारात्मक वायुमण्डल नहीं बनता। **दीदी जी साफ शब्दों में कहती, जब तुमने पुरानी दुनिया छोड़ दी, देह और देह के संबंध का त्याग किया, फिर पीछे मुड़कर क्यों देखते हो। अगर वापस जाना है तो जा सकते हो लेकिन यज्ञ की मर्यादा है ''सम्पूर्ण पवित्रता'', मन-वचन-कर्म से इस मर्यादा का अवश्य पालन करना है, एकव्रता, एकनामी होकर रहना है।**

कम खर्च बालानशीन

दीदी जी एकॉनामी (बचत) का अवतार थी। दीदी सदा कहती, यज्ञ की एक-एक कौड़ी मुहर बराबर है। कभी एक भी पैसा व्यर्थ नहीं गंवाना, कम खर्च बालानशीन। कोई भी चीज़ अच्छे से अच्छी हो लेकिन खर्चा कम हो। ठण्डी के दिनों में एक बार दीदी ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा, तुम्हारे पास गर्म कपड़े हैं? मैं तो लौकिक घर से गर्मियों में आबू आया था इसलिए गर्म कपड़े नहीं थे। दीदी ने कहा, तुम्हें आबू की ठण्डी का मालूम नहीं है, यहाँ बहुत ठण्डी पड़ती है और फिर मुझे एक काले रंग का स्वेटर दिया। इस रंग के कारण मेरा चेहरा थोड़ा बदलता हुआ देखकर कहा, इसे कुर्ते के अन्दर पहनना, ठण्डी नहीं लगेगी। काला है तो क्या हुआ, यह बहुत गर्म है। ऐसे ही अगर कोई लौकिक घर से अच्छी चीज़ें लेकर आता तो दीदी कहती, यह यज्ञ में जमा कर दो, नहीं तो तुम्हें उनकी याद सतायेगी। तुम्हें यज्ञ से जो मिलता है वही पहनना है, वही खाना है, तो तुम्हें बाबा याद रहेगा।

नम्बरवन स्टूडेन्ट

दीदी का योग और पढ़ाई पर बहुत ध्यान था। सदा कहती, पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब...। सबसे पहले अमृतवेले 4 बजे योग कराने खुद पहुंच जाती। योग में दीदी विशेष एकाग्रचित होकर ऐसे बैठती जो आंख भी नहीं झपकती। दीदी की दृष्टि से कई भाई-बहिनों को बाबा का और सतयुगी नई दुनिया का साक्षात्कार हो जाता। उनके नयनों से बाबा के प्यार में मोती झलकते दिखाई देते थे। फिर क्लास में जाते अपने हाथ में डायरी पेन लेकर जाती। सबको कहती, स्टूडेन्ट लाइफ इज़ द बेस्ट लाइफ, हम सब स्टूडेन्ट हैं, कभी अपने को टीचर नहीं समझना। **टीचर बनना है तो पहले स्वयं के टीचर बनो, स्वयं को पढ़ाओ। अपने आप से बातें करना सीखो। रात्रि के समय क्लास में पहले जाकर बैठ जाती और देश-विदेश की सेवाओं के जो समाचार आते उन्हें सुनाने के लिए कहती।** अव्यक्त बापदादा के वरदान नोट करने का

सौभाग्य मुझे मिला था। दीदी मुझे रात्रि क्लास में सुनाने के लिए गद्दी पर बिठाती और खुद (दीदी-दादी) सामने बैठकर बाबा के महावाक्य सुनती। मैं बड़ी हूँ, यह अंहकार उन्हें कभी छू भी नहीं पाया।

रमणीकता के साथ मिलनसार

दीदी बहुत रमणीक थी, सबके साथ खेलपाल भी करती, उसमें कुछ न कुछ अलौकिक हंसी के लिए प्रोग्राम बनाती। मिलनसार हो कभी चेयर रेस (कुर्सी दौड़) कराती तो कभी बैडमिन्टन साथ में खेलती। हिस्ट्री हाल में सबके साथ बैठकर ब्रह्माभोजन खाती और कभी अपने पर्सनल डाइनिंग रूम में छोटे ग्रुप के साथ भोजन करती, भोजन के बाद फल की प्लेट सबको देती। फिर ज्ञान युक्त रमत-गमत, शायरी, चुटकुले आदि सुनती और सुनाती। इसके साथ-साथ दीदी की नज़र विशेष रहती कि हर एक की दृष्टि-वृत्ति में कहाँ तक रूहानियत आई है, कौन कितनी ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करता है। ड्रेस, हाव-भाव, चाल-चलन को देखकर दीदी समझ लेती और उसी अनुसार समय पर सावधान करती, ईश्वरीय मर्यादाओं पर ध्यान खिंचवाती।

परखने की अद्‌भुत शक्ति

दीदी की बुद्धि बहुत स्वच्छ थी इसलिए सामने आने वाले हर व्यक्ति की भावनाओं को परख लेती थी और उनसे सम्पर्क में आते, उनकी हर मनोकामना को पूरी कर उन्हें बाबा पर समर्पित करा देती थी। बड़े-बड़े वी.आई.पीज़ को भी दीदी ने नियमित विद्यार्थी बना दिया। दीदी की नज़र हर एक की विशेषता पर जाती और उस अनुसार उसे सेवा में लगा देती। दीदी के सामने 'हाँ जी' कहा माना दीदी का दिल जीता। दीदी को बहस करना अच्छा नहीं लगता था। वे हमेशा कहती, तुम 'हाँ जी' करते चलो, बाबा तुमसे सब कुछ अपने आप करा लेगा। करावनहार बाबा बैठा है, हम सब तो कठपुतलियां हैं। अपनी बुद्धि अधिक नहीं चलाओ, श्रीमत के पट्टे पर चलते चलो तो कभी कोई अकर्त्तव्य नहीं होगा। मनमत, परमत के प्रभाव से सदा मुक्त रह, परचिंतन, परदर्शन को छोड़ स्वचिंतन करते अपनी उन्नति करते चलो।

निर्भय और अडोल स्थिति

दीदी जी अन्दर बाहर सच्ची और साफ थी इसलिए निर्भय रहती थी। यज्ञ के सामने कई प्रकार के पेपर आये लेकिन दीदी बड़ी सरलता के साथ अचल-अडोल स्थिति में रह यज्ञ को आगे बढ़ाने में अग्रसर रही। दीदी का उमंग-उत्साह कभी कम नहीं देखा। दीदी यही कहती, जिसका साथी स्वयं सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ भगवान है, उसके लिए माया के आंधी-तूफान क्या बड़ी बात हैं। सच की नईया हिलती-डुलती है लेकिन डूब नहीं सकती। दीदी का बाबा में, नई दुनिया की स्थापना के कार्य में, परिवार में और स्वयं में अटूट निश्चय था इसलिए सदा निश्चिंत स्थिति में रही और सबको निश्चिंत बनाया। कोई भी बात आती तो दीदी सबको कहती, अखण्ड योग करो, योग से सब विघ्न स्वत: समाप्त हो जायेंगे, योग ही सब बीमारियों की दवाई है।

साक्षीद्रष्टा और उपराम

अव्यक्त होने के पहले से ही दीदी जी यज्ञ की कारोबार को सम्भालते हुए भी साक्षीद्रष्टा बनती गई। कारोबार के विस्तार की बातें दीदी ने सुनना बन्द कर दिया, अगर कोई किसी की बात सुनाता तो दीदी जैसे सुनते भी नहीं सुनती। सबको बार-बार यही मन्त्र याद दिलाती कि अब घर जाना है, इन बातों को छोड़ो, हमें तो बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

दीदी मधुबन से स्वास्थ्य जाँच के लिए मुंबई गई, वहाँ डाक्टर्स ने एक छोटे ट्युमर का आपरेशन किया, उसी हॉस्पिटल में दीदी कुछ दिन कोमा में रही और 28 जुलाई, 1983 को भौतिक शरीर का त्याग कर बापदादा की गोदी में एडवांस पार्टी के साथ सेवा में जुड़ गई। उनके पार्थिव शरीर को मुंबई से आबू लाया गया और 30 जुलाई को हज़ारों भाई-बहिनों ने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते उन्हें अन्तिम विदाई दी। दीदी की प्यार भरी पालना का रिटर्न यही है कि हम उनके स्थापित आदर्शों पर पूर्णरूपेण चलें।❖

‘पत्र’ संपादक के नाम

अप्रैल अंक पढ़ने को मिला। वास्तव में पत्रिका अमृतोपदेश का खज़ाना ही है। ‘जीभ पर संयम’ लेख बड़ा पसंद आया। आज परिवारों में, राजनीति में, आश्रमों में, संस्थानों में तथा जन-साधारण में ‘जीभ पर संयम’ की जितनी आवश्यकता है, शायद इतनी कभी नहीं रही। आज छोटी-छोटी बातों पर विवाद, मार-पीट, हत्यायें तक हो जाती हैं जिन्हें पढ़-पढ़कर मन कुंठित हो जाता है। आज हर प्राणी को बाबा के सानिध्य की आवश्यकता है। पत्रिका में बाबा की समीपता के समाचार पढ़कर मन रोमांचित हो जाता है।

– लक्ष्मी लाल बूंलिया ‘सागर’,
शाहपुरा, भीलवाड़ा (राज.)

ज्ञानामृत का अप्रैल अंक पढ़ा। धर्म, अध्यात्म और मानवता की खुशबू बिखेरता अंक हमेशा की तरह मन को स्पर्श कर गया। ‘बड़ी एकता है विकारों की’ आलेख कटु सत्य है। कालिदास ने कहा है कि अवगुण नाव की पेंदी में छेद के समान है जो छोटा हो या बड़ा, मनुष्य को एक दिन डुबो देता है। परमात्मा का नाम तथा अहंकारमुक्त जीवन ही मनुष्य की मुक्ति का आधार हैं। सद्‌विचार, सद्‌कर्म की सुरभि बिखेरती ज्ञानामृत को पढ़ना भी मैं परमात्मा की कृपा मानता हूँ। आज जब टीवी, समाचार पत्र तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया दावानल रच रहे हैं, वैचारिक अराजकता उत्पन्न कर रहे हैं, ज्ञानामृत शीतल बयार-सा सुख दे रही है।

– मनोहर ‘मंजुल’,
पिपल्या-बुजुर्ग (म.प्र.)

ज्ञानामृत ने ज्ञान की नदियाँ बहाई हैं। मैं इसमें स्नान करके, ज्ञान रूपी पानी पीके शरीर और आत्मा दोनों को पावन बना रहा हूँ। जब कोई ग्राहक जवाहरी की दुकान पर जाते हैं और गहने देखते हैं तो कौन-सा गहना अच्छा है, यह बताना बहुत कठिन होता है क्योंकि सब गहने मनभावन होते हैं। उसी तरह जब ज्ञानामृत पढ़ते हैं तब किस लेख की तारीफ करें, यह कहना मुश्किल होता है। मार्च, 2012 का अंक बहुत प्यार से दो बार पढ़ा। सबके सब लेख नंबरवन लगे। ‘सत रूपी तप’, ‘हाफ पार्टनर’, ‘क्रोध से छुटकारा’, ‘मीठी वाणी’, ‘अहंकार से होता है पतन’, ‘सबसे बड़ी शक्ति’ ये सब बहुत-बहुत अच्छे हैं। सभी लेखक भाई-बहनों को बाबा और बहुत शक्तियाँ दें ओर वे शक्तियाँ हमारे तक बाँटते रहें, ऐसी बाबा से शुभकामना है। सभी सेवाकेन्द्रों की सेवाओं के रंगीन चित्र तथा मुखपृष्ठ का मनमोहक रंगीन चित्र बहुत अच्छा लगता है।

– संतोषकुमार, बगसरा,
अमरेली (गुजरात)

मई, 2012 का संपादकीय लेख ‘जैसा कर्म वैसा फल’ पढ़ा, मन गद्‌गद् हो गया, मुझे अपने काफी प्रश्नों के उत्तर मिल गये। कैसे शिवबाबा का शुक्रिया अदा करूँ जिसने आपको माध्यम बनाकर एक-एक शब्द को मोती की तरह पिरो दिया है। बस दिल से यही निकल रहा है, वाह मेरा प्यारा बाबा, वाह मेरा भाग्य! लग रहा है मानो मैं उड़ रहा हूँ।

– ब्रह्माकुमार उमेश,
नजीबाबाद, बिजनौर (उ.प्र.)

अचानक आई करीबी व्यक्ति की अकाल मृत्यु से हम बहुत अपसेट थे। तभी मई अंक हाथ आया। सम्पादकीय लेख ‘जैसा कर्म वैसा फल’ ने नई रोशनी दी। पेज 7 के स्लोगन ‘संसार में जो कुछ घटित हो रहा है, वह 5 हजार वर्ष बाद हूबहू रिपीट होगा’ तथा पेज 33 के स्लोगन ‘कितना जीएँ, यह महत्वपूर्ण नहीं, कैसे जीयें यह महत्वपूर्ण है’, ने मन को शीतल कर दिया तथा ड्रामा पर पक्का कर दिया।

– ब्र.कु.सुचित्रा
पातड़ा स्ट्रीट, ब्रह्मपुर (उड़ीसा)

हम निमित्त हैं, ज़िम्मेवार हैं बाबा

● राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी

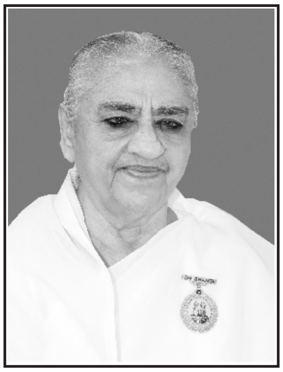

हम सबने जीवन की नैय्या शिव-बाबा के हवाले कर दी है। जब जीवन की नैय्या की ज़िम्मेवारी बाबा को दे देते हैं तो हम डबल लाइट बन जाते हैं। हमने अपनी ज़िम्मेवारी बाबा को दे दी और बाबा ने फिर हमको जो ज़िम्मेवारी दी है, उसमें बोझ नहीं है, खुशी है। बाबा ने ज़िम्मेवारी दी है कि बच्चे, आप विश्व-कल्याणकारी बन मनसा द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क अथवा कर्म द्वारा विश्व-सेवा करते रहो। **इस ज़िम्मेवारी को निभाने से खुशी होती है क्योंकि जिसका अकल्याण से कल्याण हो जाये, उसके दिल से दुआयें निकलती हैं और उन दुआओं का खज़ाना जमा होने से हमको भी खुशी होती है, हिम्मत आती है, उमंग-उत्साह आता है कि सेवा में और आगे बढ़ते जायें।** इसीलिए बाबा द्वारा दी गई ज़िम्मेवारी बहुत हल्की है और प्राप्ति कराने वाली है। दुआयें जमा होना बहुत सूक्ष्म प्राप्ति है। हमको बाहर से पता नहीं पड़ता है। मानो आपने किसी को परिचय दिया और वह बाबा का बन गया तो उसके मन से बार-बार निकलता है कि आपने हमको सही रास्ते पर लगा दिया, इस प्रकार उनके दिल की दुआयें मिलती हैं।

खुशी में नाचता है मन

हमारी खुशी अविनाशी है, सांसारिक लोगों को विनाशी चीज़ों के कारण मिलती है इसलिए विनाशी है। हमको अविनाशी पिता द्वारा मिलती है इसलिए हमारी खुशी अविनाशी खुशी है। इससे हम डबल लाइट बन जाते हैं और जो डबल लाइट होगा वह नाच सकता है। हम कोई पाँव से नहीं नाचते लेकिन हमारा मन खुशी में नाचता है। चाहे कोई बिस्तर पर भी है तो भी खुशी में नाच सकता है क्योंकि यह मन की बात है, टाँग-बाँह आादि चलाने की बात नहीं है।

बाबा को जिम्मेवारी दे दो

घर-परिवार में कभी कोई बात आ जाती है तो चेहरा बदल जाता है। कभी सोच में, कभी फिकर में, कभी चिंताओं के सागर में डूब जाते, एक दिन चेहरा बहुत खुश और दूसरे दिन देखेंगे थोड़ा-सा उदास। पूछो, भाई क्या हो गया? कल तो तुम नाच रहे थे, आज तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों हो गया? तो क्या कहते, आपको क्या पता हमारी प्रवृत्ति की बातें, आप तो अलग रहते हैं। लेकिन हम लोग भी आप सब प्रवृत्ति वालों का अनुभव सुनते-सुनते अनुभवी हो गये हैं। भल हमारे सामने आप जैसी कोई बातें नहीं आती हैं लेकिन अनुभव सुनने से तो अनुभव हो जाता है ना। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि यह कुएँ में गिरा तो हम भी गिरके देखें। उनके अनुभव से हमको अनुभव हो जाता है कि कुएं में गिरना अच्छा नहीं है। तो आप इतने सभी का अनुभव सुन-सुन करके हम और ही ज्यादा अनुभवी हो जाते हैं क्योंकि हमारे पास हज़ारों के अनुभव होते हैं। **तो सभी बातों की एक ही दवा है कि अपनी सब ज़िम्मेवारियां बाबा को दे दो। अपने ऊपर नहीं उठाओ।**

मैं निमित्त हूँ

बाबा ने कहा है, सम्भालो, छोड़के नहीं आना है। ज़िम्मेवारी कैसे निभानी है? ट्रस्टी होकर निभानी है, गृहस्थी होकर नहीं। गृहस्थी माना मेरापन और ट्रस्टी माना तेरा। सेवा करो, सम्भालो लेकिन ट्रस्टी होकर। ट्रस्टी हो तो जिसने ट्रस्टी बनाया है सब ज़िम्मेवारी उनकी है। हमेशा सोचो, मैं इन्स्ट्रूमेन्ट हूँ, निमित्त हूँ, ज़िम्मेवार नहीं हूँ, जिम्मेवार बाबा है। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

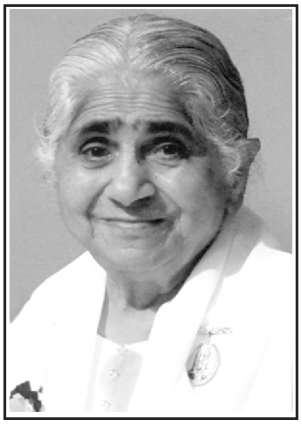

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक

प्रश्नः- वैजयन्ती माला में कौन आयेंगे?

उत्तरः- बाबा कहते बच्चे, निश्चय में विजय सदा हुई पड़ी है, निश्चयबुद्धि ही वैजयन्ती माला में आयेंगे। शुरू से सारी कारोबार में निश्चय से विजय हुई है। कोई-कोई आत्मा में निश्चय का बल बहुत है। अपने में निश्चय है, तो सेवा में सफलता है। कभी माया के वश होकर हार नहीं खायेंगे। बाबा ने कहा है, माला अन्त में तैयार होगी, कोई नये भी ऐसे निकल सकते हैं जो निश्चय से विजयी बन जायेंगे। संकल्प, श्वास सब सफल करके सफलतामूर्त बन जायेंगे।

प्रश्नः- आप अपने को मेहमान समझकर कैसे चलती हैं?

उत्तरः- अपने को मेहमान समझना, यह महान आत्मा बनने की बहुत अच्छी विधि है। मेहमान अर्थात् 'मैं' शब्द कहने से अंदर और 'मेरा' कहने से ऊपर चले जायें। संगम पर बाबा की दृष्टि से 'मैं' शुद्ध हो जाये, ईश्वरीय आकर्षण में मैं-पन की सुध-बुध भूल जाये। मेरा-मेरा की आदत जो है वह खत्म हो जाये। चिंता और व्यर्थ चिंतन करने की आदत भी निकल जाये।

प्रश्नः- कोई-कोई दिल-बेचू कैसे बन जाते हैं?

उत्तरः- बाबा की गोद में तो पले हुए हैं, बाबा के दिल पर बैठने के बिगर और कोई से दिल लगाई नहीं है। न किसी की दिल मेरे साथ लगी है, ना मैंने किसी से दिल लगाई है। जब किसी की दिल में कुछ होता है तो दिल बेचने के लिए हैरान हो जाते हैं कि कोई मेरी दिल लेवे..। जैसे सिन्धी में मातायें दही लेके बेचने के लिए निकलती थीं, वैसे कई कुमारियाँ मातायें दिल-बेचू बन जाती हैं। तो दिल लेने वाले कई निकल आते हैं और दिल में अगर दिलाराम है तो दिल बेचने और लेने की बात ही नहीं रहेगी। ऐसों की दिल कभी भारी नहीं हुई होगी। मैं कभी देखती हूँ, कोई थोड़ा नियम-मर्यादा के अनुकूल नहीं चलते हैं तो निमित्त आत्माओं की नींद फिट जाती है। कभी थोड़ा फोर्स वाले शब्द भी निकल आते हैं लेकिन दादी के मुख से कभी फोर्स के शब्द नहीं सुने। वे सदा हर एक को सावधान, खबरदार करते न्यारी और प्यारी रही।

प्रश्नः- अशरीरी स्थित की अनुभूति और प्राप्ति क्या है?

उत्तरः- अशरीरी बनने का अभ्यास बड़ा गहरा है, इसमें देह सहित देह के सब संबंधों से, कर्मबंधनों से न्यारा होना पड़ता है। देह-अभिमान बिल्कुल न आये, देह से न्यारा रहें। यह संबंध मेरे नहीं हैं, यह शरीर मेरा नहीं है, यह अभ्यास नेचुरल हो जाये। जैसे शिवबाबा विदेही है, ब्रह्मा बाबा स्नेही है, फिर भी कहते, शिवबाबा को यह शरीर लोन पर दिया हुआ है इसलिए भले वो कैसे भी यूज़ करे, शिवबाबा कहते कि यह शरीर मेरा नहीं है, मैंने लोन लिया है। ऐसे हम आत्मा भी इस शरीर में रहते अभ्यास करते। नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करेंगे तब ऊँच पद पायेंगे। थोड़ा भी अटैचमेंट शरीर से है, संबंध

से है, किससे भी है और किसी प्रकार का दिल में भय वा दुख है, ज़रा भी चिंता है तो वो अशरीरीपन की स्थिति का अनुभव नहीं कर सकता है। इसलिए सच्चाई से पुरुषार्थ करके अपने आपको ऐसा फ्री बनावें जो बाबा के पास बैठ सकें। हम आत्मा इस शरीर में सेवा अर्थ बैठे हैं। अशरीरी स्थिति माना अंदर एकदम स्वच्छ, जरा भी छी-छी बात न हो। और कोई बात न सुनो, न सुनाओ। परमात्मा के कनेक्शन से जो प्राप्ति है, वो अशरीरी बना देती है। वैसे अशरीरी बनने की कोशिश करेंगे तो देह खींचेगी या कोई कारण खींचेंगे इसलिए न्यारे हो जाओ तो सब ठीक हो जाता है क्योंकि मैं ईश्वर की संतान हूँ, वो अंदर संस्कार में आ जाये, संबंध उनके साथ है, सेवा उनके साथ है तो कोई बंधन नहीं रहेगा। जैसे शिवबाबा शरीर में है तो सिर्फ बोलने के लिए है, ऐसे हम आत्मा भी सेवा अर्थ बोलते हैं, नहीं तो ईश्वर की संतान हूँ, परमधाम में रहती हूँ।

प्रश्नः- कई बच्चे राजा बनते-बनते प्रजा बन जाते हैं, कैसे?

उत्तरः- बाबा ने भी हमारे लिए क्या भावनायें रखी हैं, प्यार भरी पालना दी है, इतना पढ़ा करके लायक बनाया और यही उम्मीद रखी कि मेरे बच्चे ऊँच पद पावें, मेरे बच्चे कभी प्रजा पद न पावें, राज्य पद पावें। बाबा कहे, मेरे बच्चे राजा बच्चे हैं और हम जिनकी सेवा करते, उनकी ही प्रजा बन जाते हैं, उनके अण्डर चलते हैं क्योंकि बड़ी महिमा हो जाती है। जिनकी सेवा की, वही मेरा आधार हो गया क्योंकि उसने हमारी बात को एप्रीशियेट किया और कोई ने एप्रीशियेट नहीं किया। कब बुलाकर यह भी नहीं कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया। कहेंगे आखिर भी इसने मेरे को समझा।

प्रश्नः- सफल करने का बल किन्हें मिलता है?

उत्तरः- ऑनेस्ट रहना बाबा ने सिखाया है। पोतामेल क्लीयर है तो बाबा का भण्डारा भरपूर है। सेवा अर्थ जो सफल करता है, सफलता का बल बाबा उसको देता है। जो करके महिमा माँगने वाला है, उसका सफल नहीं होता है। परंतु जो यज्ञ तरफ ध्यान खिंचवा करके उनका सफल कराता है, उसका बल उनको मिलता है क्योंकि अमानत में ख्यानत नहीं डाली। यह मेरा स्टूडेन्ट है, मैंने इसको संभाला है, पाला है, यह हमारे क्लास की टीचर है। नहीं, हमारा कुछ नहीं है। हम बाबा के हैं, बाबा सबका है। हर एक की सच्ची भावना से हरेक को भाड़ा मिलता है। निश्चयबुद्धि बनकर अच्छी भावना से बुद्धि को बहुत अच्छा स्वच्छ रखना है। न किसी की निंदा करनी है, न किसी की बातों में आना है। भारी होकर अगर योग में बैठेंगे तो निद्रा आ जायेगी फिर नींद के समय नींद नहीं आयेगी। तो ऐसी बातों पर ध्यान देकर सदा के लिए स्वयं को मुक्त कर लें।

हम निमित्त बने हुए को बहुत ध्यान रखना है कि हम राइट हैण्ड बन जायें। पहले है सिर पर हाथ, फिर हाथों में हाथ, फिर दिल पर बैठ गये, तो बाबा के कौन बनेंगे? राइट हैण्ड, उससे सदा ही राइट काम होता जायेगा। हम लाइट रहेंगे, माइट मिलती रहेगी तो एवरीथिंग राइट होगा।

प्रश्नः- निश्चय के बल की साकार में क्या निशानियाँ दिखाई देंगी?

उत्तरः- कभी उलझन में नही आना है। ऐसे नहीं कि यह बात ही ऐसी है इसलिए क्या करूँ, कैसे करूँ..। कभी हिम्मत नहीं हार लेना। कोई भी बात का फिकर चेहरे पर दिखाई न दे। बाबा का हाथ हमारे सिर पर है। बाबा के हाथों में हाथ है इसलिए व्यर्थ संकल्प को एलाऊ नहीं है, एक्सट्रा संकल्प चलाने की ज़रूरत नहीं है। बाबा को जिस घड़ी जो कराना है वो हुआ ही पड़ा है। बाबा ने कराया सो हुआ इसलिए निश्चयबुद्धि का जो कनेक्शन है, उसका बल बहुत है।

निश्चयबुद्धि का बल, सच्ची भावना का भाड़ा और एक बल एक भरोसा, इसलिए बुद्धि कभी विचलित नहीं हो सकती है। कभी भय पैदा नहीं हो सकता है। कभी किसी का प्रभाव पड़ नहीं सकता है। किसी का दबाव भी नहीं पड़ सकता है, यह अटल विश्वास है। ❖

ईश्वरीय सेवा में गीत-संगीत की भूमिका

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

शास्त्रों में देवी-देवताओं के अनेक नाम हैं जैसे कि विष्णु के सहस्त्र नाम हैं और इन नामों का जप भक्ति मार्ग में करते हैं। ऐसे ही हमारे ब्रह्मा बाबा के कई गुणवाचक और कर्त्तव्यवाचक नाम हैं। मिसाल के तौर पर, साकार ब्रह्मा बाबा का एक नाम है 'आदिदेव' क्योंकि उनको शिवबाबा ने नई सृष्टि के निर्माण के कार्य में अपना साथी बनाया। इस नाम से उनकी जीवन कथा भी छपी हुई है। दूसरा नाम है 'आदिद्रष्टा' क्योंकि आने वाली सतयुगी दैवी सृष्टि का पहला-पहला साक्षात्कार ब्रह्मा बाबा ने किया। उसी प्रकार से ब्रह्मा बाबा का एक और गुणवाचक नाम है 'आदि कवि'। इस लेख में मैंने स्पष्ट किया है कि ब्रह्मा बाबा के द्वारा आदिकवि के रूप से ईश्वरीय विश्व विद्यालय में कैसे गीतों द्वारा सेवाओं की शुरूआत हुई।

शास्त्रों में एक कथा है कि एक शिकारी ने एक पक्षी को तीर मारा और वह पक्षी वाल्मीकि ऋषि के आश्रम के आंगन में गिरा, ऋषि वाल्मीकि बहुत व्यथित हुए और उनके मुख से श्लोक के रूप में ये भाव प्रकट हुए कि हे शिकारी, जिस पक्षी को तुमने मारा है, अगर उसको जीवन देने की शक्ति तुम्हारे पास नहीं है तो मारने का अधिकार कैसे है? इसके बाद ब्रह्मा जी वाल्मीकि के सामने उपस्थित हुए और उन्होंने उसे काव्यात्मक शैली में रामायण लिखने के लिए कहा। शिकारी के बारे में वाल्मीकि मुनि ने जो श्लोक बोला, उसे आदिश्लोक और उस आधार पर वाल्माकि मुनि को शास्त्रकार आदिकवि मानते हैं। परंतु अभी हम जानते हैं कि शास्त्रों की कई कहानियाँ वास्तव में संगमयुग के ही विभिन्न प्रसंगों का गायन हैं। उदाहरण के लिए शास्त्रों में दशावतार की बात है, उसके बारे में मैंने ज्ञानामृत में लिखा था कि ये दस अवतार परमात्मा के एक ही समय के अवतार के विभिन्न रूप हैं, इसी प्रकार से ब्रह्मा बाबा का आदिकवि के रूप में कर्त्तव्य, गुण और महिमा की जानकारी देने के लिए मैंने आज यह लेख लिखा है।

जब हैदराबाद में यज्ञ की स्थापना हुई, उस समय ब्रह्मा बाबा सिंधी में गीत लिखते थे और फिर मातेश्वरी जी उसे गाती थी। शुरू में तो धुन भी बोली जाती थी जिसे सुनकर कइयों को साक्षात्कार भी होता था। आज भी बैंगलोर की सरला बहन वे गीत अच्छी तरह से गा सकती हैं।

मातेश्वरी जी बहुत अच्छा गाते थे और उनका एक गीत बहुत प्रसिद्ध था जिसके शब्द थे – 'चढ़ो रे मोहे आज अलौकिक रंग।' इस गीत के शब्द हमारे पास आये थे। मुंबई में एक समारोह था जिसमें ऊषा जी ने यह गीत गाना निश्चित किया पर उन्हें उसकी धुन नहीं आती थी। मातेश्वरी जी उस समय हमारे घर में ठहरे हुए थे और उनके गले के टांसिल्स का ऑप्रेशन हुए एक ही दिन हुआ था, फिर भी उन्होंने ऊषा जी को उस गीत की धुन सिखाई और दूसरे दिन समारोह में ऊषा जी ने वह गीत गाया।

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में जब से मुरली सुनाना शुरू किया तब से मुरली के प्रारंभ में कुछ चुनिंदा बाहर के गीत बजते थे। कभी बाबा मुरली के बीच में ही गीत बजाने के लिए कहते और फिर उस गीत द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को स्पष्ट करते थे।

एक बार आबू में भरत व्यास आये थे। भरत व्यास जी बहुत अच्छे गीतकार हैं और हमारे ओमव्यास भाई के चाचा हैं। परमात्म मिलन के समय जब भरत व्यास भाई बाबा से मिल रहे थे तो बाबा ने पूछा, तुमने बाबा को ढूँढा या बाबा ने तुम्हें? बाबा ने यह प्रश्न तीन बार दोहराया, तीनों बार ही भरत व्यास ने कहा कि मैंने बाबा को ढूँढ़ा है। मैं भरत व्यास के बाजू में ही बैठा था, बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, इन्हें समझाना कि कैसे बाबा

ने इन्हें ढूँढा है।

अगले दिन अर्थात् गुरुवार की सुबह हम मुरली क्लास में बैठे थे। उन दिनों हफ्ते में एक दिन साकार बाबा की मुरली टेप से सुनाई जाती थी। मुरली के शुरू में गीत बजा – धीरज धर मनुवा...। बाद में मुरली में बाबा ने कहा कि इस गीत को बनाने वाले को ही नहीं मालूम कि उसके द्वारा परमात्मा ने ईश्वरीय सेवार्थ यह गीत बनवाया है। यह गीत भरत व्यास द्वारा बनाया गया था। मुरली के बाद भरत व्यास जी ने मुझे कहा कि अभी मैं मानता हूं कि परमात्मा ने मुझे ढूँढा है, न कि मैंने परमात्मा को। ऐसे तो हम फिल्म निर्माता या निर्देशक के कहे अनुसार प्रसंग को देखते हुए सभी गीत लिखते हैं। लेकिन इस गीत की बात कुछ और है। वैसे तो मैं पक्का सूर्यवंशी हूँ, आठ-नौ बजे उठता हूँ लेकिन एक दिन सुबह चार बजे ही उठ गया और अपने आप ही इस गीत की तर्ज गुनगुनाने लगा। मुझे अंदर से प्रेरणा हुई और मैंने यह गीत लिख डाला। दस बजे एक फिल्म निर्माता आये और मुझसे पूछा कि आपके पास कोई अच्छा गीत हो तो मुझे दीजिये। मैंने उन्हें यह गीत सुनाया, उन्हें पसंद आया और उन्होंने अपनी अगली फिल्म के लिए इस गीत को ले लिया। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि परमात्मा ने ही मुझे प्रेरणा दी और मुझे चार बजे उठाया और मुझसे यह गीत लिखवाया।

सन् 1963 की बात है। मैंने साकार बाबा को पत्र लिखा कि आप मुरली सिनेमा के गीतों पर चलाते, यह बहुत अच्छी बात है क्योंकि आपने सिनेमा देखा नहीं है। इन गीतों को सुनने से सबको तो शिवबाबा याद आता है लेकिन हमने तो इनमें से कई फिल्में देखी हैं और इसलिए जब मुरली क्लास में ये गीत बजते हैं तो हमें शिवबाबा याद नहीं आता है बल्कि फिल्म का वह दृश्य सामने आता है। मैंने मिसाल के तौर पर लिखा कि फिल्म दीदार का गीत 'बचपन के दिन भूला न देना..' का बहुत सुंदर आध्यात्मिक अर्थ आप बताते हैं परंतु हमारे सामने तो वो सिनेमा का दृश्य ही आता है और इसलिए हमें उस समय ज्ञान समझने में परेशानी होती है इसलिए क्यों नहीं आप अपने गीतों पर मुरली चलाते। मेरे पत्र के जवाब में बाबा का तुरंत पत्र आया कि बच्चे, मुझे अब तक कोई ऐसा राइट हैण्ड बच्चा नहीं मिला है जो मुझे अपने नये गीत बनाकर भेजे, अगर किसी ने अपने गीत बनाकर भेजे तो मैं उन्हें रिकॉर्ड करवाकर उन गीतों पर मुरली चलाऊँगा। उस पत्र के जवाब में मैंने और ऊषा जी ने बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, क्या हम अपने गीत बना सकते हैं? दो दिन में ही बाबा का जवाब आया कि बच्चे, यह कोई पूछने की बात है! बाबा को अपने गीत बनाकर भेजने ही चाहिएँ। आप भले अपने गीत बनाओ। मैंने जवाब में लिखा कि बाबा इसमें समय तो लगेगा क्योंकि हम इतनी अच्छी रीति से गीत गाना और वाद्ययंत्र बजाना नहीं जानते हैं तो जो चीज नहीं जानते हैं, वो कैसे बना सकते हैं, थोड़े समय की छुट्टी दो फिर यह सब सीखकर बना लेंगे। बाकी ऊषा जी को राग, मात्रा तथा ताल का तो बहुत अच्छा ज्ञान है। फिर ब्रह्मा बाबा ने पत्र में लिखा, बच्चे, तुम्हें कोई गायन तथा वाद्ययंत्र बजाना सीखने की ज़रूरत नहीं है, तुम्हें तो सिर्फ निमित्त बनना है, तुम्हें ऐसे गीत लिखने वाले, गीत गाने वाले, संगीत द्वारा सजाने वाले अपने आप मिल जायेंगे, तुम्हें सिर्फ गीत रिकॉर्ड कराने के लिए निमित्त बनना है, बाकी सब कुछ बना हुआ है, बन ही जायेगा।

हमने ब्रह्मा बाबा के इन महावाक्यों को साकार होते हुए देखा और अनुभव किया। इस पत्र के दो-चार दिन बाद ही भ्राता ललित सोढा जी की माताजी जो वाटरलू मेन्शन सेन्टर की नियमित स्टूडेन्ट थी, के कहने पर ललित सोढा जी सेन्टर पर सात दिन का कोर्स करने के लिए आये। मैंने उनसे पूछा कि आप क्या करते हो तो उन्होंने कहा कि मैं संगीत सिखाता हूँ, मुझे कई वाद्य यंत्र बजाने भी आते हैं।

मैं शास्त्रीय संगीत के कई राग भी सिखाता हूँ। तब हमने उनसे पूछा कि आप हमारा एक गीत रिकॉर्ड कर देंगे? उनकी माताजी सामने ही बैठे थे तो उन्होंने कहा कि मैं अपनी माताजी के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। मैं यह ईश्वरीय सेवा ज़रूर करूँगा। तब हमने गीत ढूँढ़ना शुरू किया। उस समय गीतों की एक किताब छपी थी जिसका शीर्षक था 'भगवान आया है'। उसमें से हमने एक गीत चुना, उन्हें दिखाया, तब उन्होंने हमें समझाया कि यह गीत नहीं, कविता है। संगीत के अंदर राग में गाना हो तो गीत चाहिए, कविता नहीं। इस प्रकार हमें पहली बार मालूम पड़ा कि गीत और कविता में क्या अंतर होता है।

मेरे एक मित्र बहुत अच्छे कवि थे और उनकी कविताओं की कई किताबें भी छपी थी। मैंने उन्हें कहा कि हमारी यह कविता है, आप इसे गीत में रूपांतरित कर दो और उन्होंने दो दिन के अंदर ही बहुत सहज रीति से उस कविता का गीत में रूपांतरण कर दिया। हमने वह गीत ललित सोढ़ा जी को दिखाया। उन्हें पसंद आया। हमारे घर में एक हारमोनियम था जिस पर ऊषा जी ने अपनी कुमारी अवस्था में शास्त्रीय संगीत सीखा था और इसलिए उनके नानाजी ने उन्हें वह हारमोनियम सौगात में दिया था। ललित भाई ने उस हारमोनियम पर उस गीत को संगीत दिया जिसे सुनकर हमारा हौसला बढ़ गया।

उस समय शील दादी के पास स्पूल वाला टेपरिकॉर्डर था जिसमें रिकॉर्डिंग के लिए दो-तीन स्पीकर थे। हम वह टेपरिकॉर्डर लेकर आये, ललित भाई अपने वाद्ययंत्र लेकर आये और साथ में तबला, शहनाई बजाने वालों को भी लेकर आये। हमारे घर के एक कमरे को स्टूडियो बना दिया गया। बाहर का आवाज़ अंदर न आये, इसकी पूरी तैयारी की गई और फिर रात के 12 बजे जब बाहर का आवाज़ कम हो जाता है, तब ललित भाई ने उन वाद्ययंत्रों के साथ यज्ञ का पहला गीत गाया – 'वसुधा के आंचल में शिव स्वागत आज तुम्हारा...।' इस गीत का स्पूल हमने मधुबन में ब्रह्मा बाबा के पास भेज दिया। बाबा ने गुरुवार को भोग में वही गीत बजाया। संदेशी बहन उस गीत-संगीत के वायुमंडल में ही अव्यक्त बाबा के पास गई और बाबा ने सारा गीत सुना और संदेश भेजा कि बच्चों की बुद्धि की लाइन क्लीयर है। लौकिक दुनिया में भी समारोह में पहला-पहला गीत स्वागत का होता है तो बच्चों ने भी पहला-पहला गीत बाप के स्वागत का ही बनाया है। बाप बच्चों के इस पुरुषार्थ पर बहुत खुश है। आगे चलकर यज्ञ के अंदर अपने बहुत अच्छे-अच्छे गीत बनेंगे और संगीत की दुनिया में बाबा के यज्ञ का बहुत ऊँचा स्थान हो जायेगा। इस प्रकार से यज्ञ में गीतों को बनाने की सेवा प्रारंभ हुई। बाद में और भी कई गीत हमारे घर में रिकॉर्ड हुए।

इसके बाद वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर भ्राता अधिकारी और उनके साथियों द्वारा 'हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान..' गीत की रिकॉर्डिंग हुई। इस प्रकार से गीत-संगीत हम ब्राह्मणों के आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तीव्रता लाने का निमित्त साधन बन गया। बाद में हमने गीतों के रिकॉर्ड बनाने का कारोबार शुरू किया और चार-चार गीतों के दो मिनी रिकॉर्ड बनाये जिसमें से कई गीत तो आज भी ट्रेफिक कंट्रोल में बजते हैं। उन गीतों के रिकॉर्डस हमने ऐसे बनाये जो रेडियो स्टेशन पर भी बज सकें। जिस कंपनी द्वारा हमने गीतों की रिकॉर्डिंग करवाई, उस कंपनी के मैनेजर की माताजी बाबा की अनन्य बच्ची थी और इसलिए उन्होंने अपने गीत रिकॉर्ड करने में बहुत सहायता दी और उन्होंने ही कहा कि रेडियो पर गीत सुनाने हो तो उस हिसाब से गीत 3 मिनट या 3 मिनट 10 सेकंड का होना चाहिए, उससे लंबा होगा तो रेडियो वाले गीत नहीं सुनायेंगे इसलिए हमने इस मिनी रिकॉर्ड में तीन-तीन मिनट के गीत भरे और अपने कई बहन-भाइयों ने

विभिन्न रेडियो स्टेशन पर जाकर उन्हें वह रिकॉर्ड दिये। हम भी बॉम्बे रेडियो स्टेशन पर गये, रेडियो स्टेशन के ऑफिसर ने गीत सुनकर उन्हें बजाना मंजूर किया और काफी दिनों तक विभिन्न रेडियो स्टेशन पर हमारे गीत बजते रहे। उस जमाने में रेडियो स्टेशन का एक नियम था कि एक गीत एक बार बजने पर उसकी दो रुपये रॉयल्टी मिलती थी। उसमें से एक रुपया गीत बनाने वाले अर्थात् हमें मिलता था तथा एक रुपया जिस कंपनी द्वारा रिकॉर्डिंग हुई, उसे मिलता था। इन दो मिनी रिकॉर्डस के गीतों का बहुत सुंदर रिस्पांस रेडियो स्टेशन से मिला। जो रॉयल्टी हमें मिली, वह रिकॉर्ड बनाने के खर्च से ज्यादा थी, इस प्रकार गीतों द्वारा ईश्वरीय सेवा के लिए धन मिलना शुरू हो गया। बाद में रेडियो स्टेशन वालों ने रॉयल्टी देना बंद कर दिया।

गीतों के बारे में एक विशेष अनुभव लिखना चाहता हूँ। हम जब शुरू में विदेश सेवा पर निकले तब साथ में गीतों के दो मिनी रिकॉर्डस की 15-20 कॉपी भी साथ लेकर गये थे। पहला-पहला विदेश सेवा का स्थान लंदन था। लंदन रेडियो पर रविवार को दोपहर आधा घंटा हिन्दी में कार्यक्रम आता था और उसमें हमें 10 मिनट का इंटरव्यू देने का समय मिला। हमने कार्यक्रम में बताया कि हम चार गीतों के रिकॉर्ड लेकर आये हैं, उसमें से एक गीत सुनाते हैं। बाद में 7 मिनट ऊषा जी ने अपना भाषण रिकॉर्ड कराया। इस प्रकार उस रविवार के दिन दोपहर में बाबा का गीत और ऊषा जी का भाषण सब श्रोताओं ने सुना। गुरुवार के दिन लंदन रेडियो स्टेशन के हिन्दी कार्यक्रम का डायरेक्टर परेशान होकर हमारे पास आया और कहा, रमेश भाई, आपने ऐसा क्यों कहा कि हम चार गीत लेकर आये हैं, उसमें से एक ही गीत सुनाते हैं। हमारे पास श्रोताओं की फरमाइश आई है कि हम सिनेमा के गीत तो रोज ही सुनते हैं, ऐसा सुंदर आध्यात्मिक गीत पहली बार सुना तो हम चारों ही गीत सुनना चाहते हैं। हमने कहा कि इसमें क्या बड़ी बात है, हम आपको अपना एक मिनी रिकॉर्ड दे देते हैं, आप हमेशा उसे बजाते रहना। कार्यक्रम का डायरेक्टर खुश हो गया। अगले रविवार के दिन उसने अपने कार्यक्रम में कहा कि हम श्रोताओं की फरमाइश को देखते हुए बाकी के गीत आपको सुना रहे हैं।

बाद में हम लेस्टर गये जो लंदन से करीब 110 मील दूर है। लेस्टर रेडियो के हिन्दी कार्यक्रम का डायरेक्टर भी हमें 10 मिनट दे रहे थे। हमने उन्हें लंदन कार्यक्रम का अपना अनुभव सुनाया और कहा कि गीत सुनने के बाद जो फरमाइश आई उस कारण चारों ही गीत सुनाने पड़े। इसलिए आपको भी ऐसी परेशानी न हो, इस कारण 12 मिनट के चारों गीतों तथा 8 मिनट का ऊषा जी का प्रवचन प्रसारित करें। उस डायरेक्टर ने हमारी बात मान ली। हमने उन्हें चार गीत दे दिये और इंटरव्यू से पहले वे गीत बजे और फिर 8 मिनट ऊषा जी का इंटरव्यू चला, इस प्रकार 20 मिनट का कार्यक्रम चला। बाद में हम जहाँ-जहाँ गये, वहाँ-वहाँ कार्यक्रम में बाबा के गीत बजने शुरू हो गये। भारत में भी बाद में अपने गीतों की अनेक कैसेट बनी क्योंकि स्पूल का ज़माना खत्म हो गया था और कैसेट का ज़माना शुरू हो गया था।

दूसरी रिकॉर्डिंग जब हुई तो हम रिकॉर्ड लेकर बाबा के पास आये। बाबा ने फौरन मुरली क्लास में वह गीत बजवाया और सबके सामने गीतों की महिमा की और उसे ईश्वरीय सेवा में शामिल कर दिया।

आज हमारे पास 3,000 से भी अधिक गीत हैं। न सिर्फ हिन्दी भाषा में किंतु भारत तथा विदेश की विभिन्न भाषाओं में भी गीत बने हैं। इस प्रकार विहंग मार्ग की सेवा में गीत-संगीत का बहुत बड़ा योगदान है। अगले लेख में नृत्य-नाटिकाओं का ईश्वरीय सेवा में प्रारंभ कैसे हुआ, उसके बारे में चर्चा करेंगे। ❖

पतियों का पति मिला

● **ब्रह्माकुमारी लता मते, निघोज (शिर्डी)**

मेरा लौकिक जन्म सन् 1973 में एक साधारण परिवार में हुआ। बचपन से मेरे भक्तिभाव के संस्कार थे। अठारह साल की उम्र में एक बड़े अच्छे घर में मेरी शादी हुई। भारत में कोई भी कन्या जब ससुराल जाती है तो वहाँ यह कहा जाता है कि हमारे घर लक्ष्मी आई है। एक समय था जब नारी सचमुच लक्ष्मी थी लेकिन आज तो यह शब्द कहने मात्र रह गया है, व्यवहारिक जीवन में न नारी में वैसे गुण हैं और न ही ससुराल वाले उसे लक्ष्मी की तरह मान-सम्मान देते हैं। परंतु, मेरे पुण्य कर्मों का फल समझिए, ससुराल के परिवार से भी और पति से भी मुझे बेहद मान-सम्मान और लाड़-दुलार मिला। मेरे पति ने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मैं इसका वर्णन नहीं कर सकती। हँसते-खेलते मैं तीन बच्चों की माँ भी बन गई।

मेरे दुखों का अंत ना रहा

उन्हीं दिनों हमारे गाँव में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ से एक बहन ने ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स कराया। मैं भी कोर्स में जाने लगी। मुझे ज्ञान बहुत अच्छा लगा। हमारे गाँव में सेन्टर खुल गया और मैं रोज़ मुरली सुनने सेन्टर जाने लगी। एक दिन मैं और मेरे पति नासिक से आ रहे थे, तभी दुर्घटना घटी। हम दोनों बहुत जख्मी हुए और अलग-अलग अस्पताल में दाखिल किए गए। पति ने दिसंबर 2004 में अपना पुराना शरीर छोड़ दिया। मुझे तो कुछ भी पता नहीं था। पंद्रह दिन बाद जब मेरी हालत में सुधार आया तो घरवाले उनके निधन का समाचार बताने और मुझे घर ले जाने के लिए हॉस्पिटल आये। तब तक संस्कार की विधि पूरी हो चुकी थी। घरवालों तथा डॉक्टर्स को एक ही चिंता थी कि इसे कैसे बताएँ। तब मेरे पति के एक दोस्त ने अपने दिल पर पत्थर रखकर मुझे यह बात बताई। सुनते ही मेरे पैर के नीचे से ज़मीन ही खिसक गई। मेरे दुखों का अंत ना रहा, पति की स्मृति सताने लगी। मैं क्या करूँ और क्या न करूँ, समझ में नहीं आ रहा था। ज़िन्दगी बोझ बन गई। मैं अपने को बिल्कुल अकेली, असहाय और निराश्रित समझने लगी। बाबा को भी बहुत याद करने लगी।

शिवबाबा के साथ ने बना दिया सनाथ

जब मैं उनकी याद में दिन-रात रोती तो मेरे बच्चे कहते, माँ हम हैं ना, चिंता मत करो। साल भर बाद फिर सेन्टर जाने लगी। प्यारे बाबा ने बेसहारा को सहारा दे दिया। हमारी टीचर बहन की शुभभावना और शुभकामना ने मुझे बहुत आगे बढ़ाया। मैं ज्ञान-योग के मार्ग पर तीव्र गति से चलने लगी। परमात्मा पिता से बुद्धियोग जुट गया। **इस पुरानी-गंदी दुनिया में विधवा होकर जीना कोई मासी का घर नहीं है लेकिन मैंने पतियों का पति पाया। जब मैं प्यारे बाबा को याद करती तो मन में संकल्प चलते कि मीठे बाबा, आपके होते मैं अनाथ नहीं हूँ। आपने मुझ आत्मा को सनाथ बना दिया। मैं पद्मापद्म भाग्यशाली हूँ, प्यारे बाबा आपने अपनी गोदी में बिठा लिया है। मीठे बाबा, मरते दम तक कभी भी आपको नहीं भूलूँगी। हे प्यारे बाबा, आपका अमर सुहाग मुझे मिल गया। अब मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। प्यारे बाबा, मेरा श्वास, संकल्प, तन-मन-धन सब कुछ आपकी श्रीमत अनुसार सफल हो।**

यज्ञ माता बनने का सौभाग्य

बाबा ने मुझे जीने की नई आशा

दी। मुझे बहुत सुंदर सेवा के निमित्त बनाया। हम सब मिलजुलकर गीता पाठशाला चलाते हैं। मिल-जुलकर यज्ञ की सेवा करते हैं। मुझे यज्ञ माता कहने लगे हैं। मैं तन-मन-धन से यज्ञ की सेवा करती हूँ। प्यारे बाबा ने मुझे यज्ञ की सेवा के निमित्त बनाया है। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ। प्यारे बाबा ने हम सभी माताओं को ब्रह्माभोजन बनाने की सेवा दी है।

बाबा ने करवाए अलौकिक अनुभव

मुझे अलौकिक अनुभव होने लगे। जब मैं पहली बार बाबा से मिलने मधुबन गई तो सुबह चार बजे कांफ्रेंस हॉल में योग कर रही थी। बाबा ने मुझे बहुत दर्दनाक दृश्य का साक्षात्कार कराया। मैंने देखा कि खून की नदियाँ बह रही थी, चारों तरफ पानी ही पानी था, कोई पानी में डूब रहे थे। बहुत आग लगी थी, कोई आग में जल रहे थे। एक तरफ भूकंप आ रहा था, कोई भूकंप में दब रहे थे। सभी चिल्ला रहे थे, बचाओ, बचाओ। मैं ऊपर बाबा के साथ थी। ऊपर से देख रही थी तो बाबा ने मुझसे पूछा, बच्ची, आपका किसी में मोह है? तो मैंने कहा, बाबा, मेरा किसी में भी मोह नहीं है। बाबा ने पूछा, बच्ची, ऋषि (छोटा बेटा) में है? मैंने कहा, ऋषि में भी नहीं। बाबा ने मुझे स्वर्ग का टिकट दिया।

बाबा का मुझसे इतना गहरा प्यार है कि मैं इसका वर्णन नहीं कर सकती। मेरा भी बहुत गहरा प्यार है। ईश्वरीय ज्ञान से मुझे कर्मों की गुह्य गति समझ में आ गई और मेरा नया जन्म हो गया। अब मैं गमों की दुनिया से बाहर निकल आई हूँ। यह है मेरे बाबा की कमाल!

सर्व आत्माओं के प्रति यही शुभकामना है कि सभी भगवान के कार्य में अपना सब कुछ सफल करें। समय की नाजुकता को पहचान, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सिखाये जा रहे सहज राजयोग द्वारा देवता बनने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ करें। ❖

बेहद की वैरागी दीदी

– ब्रह्माकुमार सत्यनारायण, ज्ञान सरोवर

धक से सब कुछ त्याग किया, ब्रह्मा बाप समान
यज्ञ में सब कुछ किया, तन, मन, धन कुर्बान
घर जाने का आप देती, सबको मंत्र महान
बेहद की वैरागी दीदी, सभी करें गुणगान

मुरली से था प्यार बहुत, मुरली का सम्मान
कभी नहीं मिस करती थी, मुरली अमृतपान
प्रश्न पूछ कर मुरली से, खिंचवाती सबका ध्यान
बेहद की वैरागी दीदी, सभी करें गुणगान

नियम और मर्यादा उनके, जीवन की थी शान
मीठी शिक्षा सुना-सुनाकर, खुलवा देती कान
सखीपन की दे पालना, जीवन लेती दान
बेहद की वैरागी दीदी, सभी करें गुणगान

यज्ञ से था प्यार बहुत और इकानामी का ध्यान
खूब खातिरी करती थी, घर आये जो मेहमान
परख शक्ति से आप लेती, दिल की बातें जान
बेहद की वैरागी दीदी, सभी करें गुणगान

गम्भीर थीं, रमणीक थीं, संतुलन था आलीशान
बालक सो मालिक बन करती, यज्ञ के सब काम
सुनी-सुनाई बातों से, रहती थी उपराम
बेहद की वैरागी दीदी, सभी करें गुणगान

हमारी वास्तविक निर्धनता यह है कि हम दूसरों को सुधारने का अधिक से अधिक प्रयत्न करते हैं और स्वयं को सुधारने का अल्प से अल्प।

पैरेन्ट्स डे पर विशेष...

माता, संस्कार निर्माता

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बार एक घोड़ी की बच्ची ने, जो आँख से कानी थी, अपनी माँ से पूछा कि मैं कानी क्यों हूँ? घोड़ी ने उत्तर दिया कि बेटा, जब तू मेरे पेट में थी तब एक दिन राजा मुझे शिकार के लिए ले गया और एक हिरण के पीछे मुझे दौड़ाया। मैं इतनी तेज़ न दौड़ सकी, हिरण भाग गया। राजा को थोड़ा क्रोध आया, उसने ज़ोर से मेरे पेट पर चाबुक मारा, जिस कारण तुझे आँख खोनी पड़ी। बच्ची ने कहा – माँ, यह राजा तो बड़ा निर्दयी है, मौका आने पर मैं इससे बदला अवश्य लूँगी। माँ ने कहा – नहीं बेटा, राजा बड़ा अच्छा है। बहुत प्यार से हमारी पालना करता है। पिछली दस पीढ़ियों से हम राजा के इसी खानदान में सेवा कर रहे हैं। हमने राजा का नमक खाया है। हम राजा के साथ कभी भी गद्दारी नहीं करेंगे। बच्ची ने कहा – छोड़ो माँ, इन उपदेशों की बातों को, मैं अब कोई छोटी नहीं हूँ, अपना भला-बुरा सब समझती हूँ। मैं अपने भीतर लगी बदले की आग को बुझाकर ही रहूँगी। माँ-बेटी की बात चल ही रही थी कि इतनी देर में उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दीं और पता चला कि पड़ोसी राजा ने इस राजा पर हमला कर दिया है और राजा कानी घोड़ी पर सवार होकर युद्ध में जाना चाहता है। कानी घोड़ी को खुशी हुई कि बदला लेने का मौका आ गया। घोड़ी तैयार कर दी गई और विदाई से पहले वह अपनी माँ को सलाम करने आई। माँ ने उसे फिर कहा – बेटा, याद रखना, राजा को युद्ध में जिताना हमारे कुल की परंपरा है। हम खुद भले हताहत हो जाएँ पर अपने अन्नदाता का बाल भी बाँका नहीं होने देते। माँ की बात सुन वह कुछ न बोली लेकिन मन में तो बदले की आग थी ही।

युद्धस्थल में पहुँचने के बाद जब-जब उसके मन में ख्याल आया कि मैं राजा को गिरा दूँ, तब-तब उसे लगा कि माँ सामने खड़ी है और ना-ना का इशारा करके उसे रोक रही है। आखिरकार उसने अपना मन बदला और बड़ी सावधानीपूर्वक राजा को हर मुसीबत से बचाते हुए जिताकर महल में ले आई। राजा की जयजयकार के साथ-साथ घोड़ी की भी जयजयकार हुई। वह कानी घोड़ी सीधी अपनी माँ के पास गई और बोली – माँ, यह जीत और जयजयकार मेरी नहीं है लेकिन इसका सारा श्रेय आपको है। मैंने जब-जब उलटी चाल चलने की कोशिश की, तू मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और तूने ही मुझे वफादारी की राह दिखाई। माँ, मैं तेरी शिक्षाओं का अहसान जीवन-भर नहीं भूलूँगी।

पेट तो भरा पर आत्मा खाली रही

पशुओं की इस कहानी के माध्यम से माँ के गुरु रूप की बहुत सुन्दर व्याख्या की गई है। जैसे कोई अंधकार में भटकता हो और उसे

प्रकाश की एक किरण सही मार्ग दिखा दे, इसी प्रकार माँ की श्रेष्ठ शिक्षाएँ जीवन-पथ के अंधकार में प्रकाश की किरणों का काम करती हैं। बच्चे को अपनी माँ पर अटूट विश्वास होता है। कहा जाता है – माँ चाहे राक्षसी हो, पर अपने बच्चे के लिए वह जीवनदायिनी होती है। बच्चे को भूख लगती है तो भोजन उससे मिलता है, ठोकर लगती है तो संभाल उससे मिलती है, तकलीफ होती है तो सेवाधारी वह बनती है, निराशा और उदासी आती है तो उत्साह का संचार वह करती है। करोड़ों मनुष्यों से भरे हुए संसार में बच्चे की केन्द्रबिन्दु उसकी माँ ही होती है। जब बच्चा माँ के दिये हुए भोजन, लोरी और संभाल को प्यार से स्वीकार करता है तो उसकी मीठी शिक्षाओं के प्रति भी सहज आस्था और विश्वास रखता है। अत: माँ उसके जीवनकाल के प्रारंभ से ही ये मीठी शिक्षायें उसे देनी प्रारंभ करे। यदि वह बच्चे को केवल स्थूल पालना देती है और अच्छाई-बुराई का ज्ञान नहीं कराती, बुराई से बचने की सलाह नहीं देती तो बच्चे का पेट तो भर जाता है लेकिन उसकी आत्मा खाली और खोखली रह जाती है। **यह अधूरा विकास, एक तरफा विकास, केवल शारीरिक विकास परिस्थितियों के थपेड़ों से उबरने की शक्ति उसे प्रदान नहीं कर पाता। परिणाम यह निकलता है कि भीतर से आधा-अधूरा, खाली-खोखला वह बालक कई तरह के अमर्यादित चाल-चलन का शिकार हो जाता है और तब हम सोचते हैं, हमने तो इसे अच्छा खिलाया, पिलाया, पहनाया था; हमने कोई कमी थोड़े ही छोड़ी थी इसकी पालना में; पर कमी छोड़ी थी, आत्मा को कुछ भी खिलाया, पिलाया या सुझाया नहीं था।**

पंछी की युक्ति

एक बार एक घोंसले में एक पंछी अपने बच्चे को चुग्गा दे रहा था। उस घोंसले को ध्यान से देखा गया, उसमें काँच के टुकड़े और लोहे की पैनी पत्तियाँ भी पड़ी थीं। नाजुक बच्चों के लिए शरणस्थल बनाये गये इस घोंसले में इतनी कठोर चीज़ें पंछी क्यों उठा लाया, यह एक रहस्य की बात थी। चुग्गा लेते-लेते बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ और अपने कोमल पाँव से घोंसले में ही थोड़ा टहलने लगा, लेकिन जब टहलता था तो वे काँच के टुकड़े और लोहे की पत्तियाँ उसके पाँव में चुभती थी, जिस कारण उसके पंख तीव्रता से उड़ने के लिए व्याकुल होते थे। इस व्याकुलता में वह बच्चा बहुत जल्दी ही उड़ने में सक्षम हो गया।

एक पंछी को भी अपने बच्चे को समर्थ, शक्तिवान, हिम्मतवान और जल्दी से जल्दी आत्मनिर्भर बनाने की युक्तियाँ आती हैं। पंछी तो केवल शारीरिक सामर्थ्य दे सकता है परन्तु सर्वोच्च बुद्धिमान प्राणी मानव के लिए आवश्यक है कि वह बच्चे को भौतिक सामर्थ्य के साथ-साथ दुनिया की कीचड़ से बचकर कमल-पुष्प समान जीवन व्यतीत करने का मार्गदर्शन और मनोबल भी प्रदान करे।

जेबों की सार्थकता

एक बार हम एक स्कूल में गए। अध्यापकों ने बताया कि 11वीं क्लास में आते ही हमने बच्चों को यूनिफॉर्म से मुक्त कर दिया परंतु इससे माता-पिता को बड़ी तकलीफ हुई। उनके फोन आने लगे कि आप यूनिफॉर्म पुन: लागू कर दीजिए, हमारे बच्चे महंगी टीशर्ट और कई-कई जेबों वाली जीन्स की माँग करने लगे हैं, हम परेशान हो गये हैं। यह सच है कि कहीं बच्चे माँग बढ़ा लेते हैं और कहीं माता-पिता मोहवश स्वयं भी उन्हें माँग बढ़ाना सिखा देते हैं। सवाल यह है कि इन कई-कई जेबों में क्या डाला जायेगा? अध्यात्म कहता है, इन जेबों को गुणों से भरा जाये। जींस की ऊपर की दोनों जेबों में दो गुण **साहस** और **सामना करने की शक्ति** डाले जाएँ। साइड की ऊपर की दोनों जेबों में **नम्रता** और **सत्यता** इन दो गुणों की विषयवस्तु डाली जाए। पीछे की दो जेबों में **आज्ञाकारी** और **वफादारी** इन दो भावनाओं को रख लिया जाये। घुटने के ऊपर की दो जेबों में **धैर्य** और

सहनशीलता को स्थान दिया जाये। अन्य दो जेबों में **ईमानदारी** और **कर्त्तव्यपरायणता** को डाल दिया जाये। जीवन की परिस्थितियों, रुकावटों, टकराहटों, विरोधों, अवरोधों, चुनौतियों, पीड़ाओं और दुविधाओं के समय ये गुण ही विघ्न-विनाशक बनकर काम आएंगे। कहा जाता है, शक्ति से श्रेष्ठ युक्ति है और धन से श्रेष्ठ मनोबल है। धन चोरी हो सकता है पर मनोबल नहीं। धन में मंदी आ सकती है पर मनोबल में नहीं। इसलिए बच्चों के जीवन को गुणों से भरिए, ये गुण उनके जीवन पथ को प्रकाशित करते रहेंगे।

कान में सुना दीजिए दो बातें

कई मातायें शिकायत करती हैं कि बच्चे हमारी सुनते नहीं हैं, पास बैठते नहीं हैं। मान लिया पर एक समय ऐसा भी है जब वे आपके पास बैठते हैं या आप उनके पास बैठ सकते हैं और वो समय है, भोजन का। प्यार से बनाई गई चीज़ें, प्यार से परोसते समय, प्यार से पुत्र को यह भी सुना दो – **'बेटा, संसार की सभी आत्मायें एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-भाई हैं और बेटा, दुनिया की सभी मातायें-बहनें सम्मान की पात्र हैं। अहंकारवश कभी किसी का अपमान न करना, न ही कभी किसी पर कुदृष्टि या कुवृत्ति का प्रहार करना, नहीं तो तेरे इन बुरे कर्मों के कीचड़ के छींटे मुझे भी लगेंगे। जितने प्यार से तू मेरे बनाए गए भोजन को स्वीकार कर रहा है बेटा, इतने ही प्यार से इन शिक्षाओं को स्वीकार करना। यह आप आत्मा का भोजन है।'**

इसी प्रकार, पुत्री के कान में भी दो बातें सुना दो – **'बेटी, संसार चमक-दमक का आवरण चढ़ी हुई झूठी चीज़ों से भरा पड़ा है। कभी भी वस्तु, व्यक्ति, वैभव की चमक-दमक से विवेक की आँखें बंद मत होने देना। नारी का सबसे बड़ा धन उसका चरित्र और उसके सद्गुण हैं, इनकी सदा रक्षा करना। कुसंग, रीस, प्रभाव के वश होकर कभी भी नारी सुलभ लज्जा को मत खोना। बेटा शरीर ढकने की चीज़ है और चरित्र दिखाने की। इसलिए शरीर को ढक कर रखना और चरित्र को इतना उजला बनाना कि उसे सारा संसार देखे।'** अगर हमारी मातायें अपने पुत्र-पुत्रियों के कानों में ये प्यार भरी शिक्षायें भी डाल दें तो ये बच्चे कर्मक्षेत्र पर शिवाजी और महारानी लक्ष्मी बाई की तरह सफल योद्धे साबित होंगे। श्रेष्ठ संस्कारों की यह धरोहर इस जन्म के साथ-साथ अगले जन्मों तक भी आत्मा में रची-बसी रहेगी।

महात्मा गांधी ने कहा था – 'आज मैं जो कुछ भी हूँ, मेरी माँ की देन हूँ।' वैसे ही आपके बच्चे भी कहेंगे, हमारी माँ ने हमें संस्कारों का ऐसा श्रेष्ठ ज्ञान दिया जो हम हर परिस्थिति में हैल्दी, वेल्दी और हैप्पी रहते हैं। लेकिन इसके लिए आप माताओं का सशक्त होना बहुत ज़रूरी है और यह सशक्तिकरण ईश्वरीय ज्ञान से ही आ सकता है। इसके लिए आप पहले स्वयं ईश्वर मात-पिता से श्रेष्ठ ईश्वरीय संस्कारों का ज्ञान ग्रहण करें और फिर यही ज्ञान अपनी संतान को भी दें, आपका मातृत्व धन्य हो जायेगा। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 28, 29, 30, 31 जुलाई
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें – डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट:** www.ghrc-abu.com
फैक्स: 238570 **ई-मेल:** drmurlidharsharma@gmail.com

दिल का हाल सुने दिलवाला

● **ब्रह्माकुमार राधेश्याम गुप्ता, हाथरस**

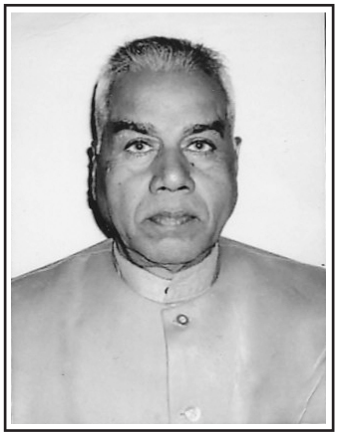

किसी शायर द्वारा कही गई इन दो पंक्तियों,

'दिल-ए-नादान तुझे हुआ क्या है,
आखिर इस दर्द की दवा क्या है'

का जवाब है 'सहज राजयोग'। एन्जाइना एवं हार्ट अटैक जैसी बीमारियों से ग्रसित दिल के मरीजों के लिए यह खुशखबरी है कि दिल की धमनियाँ ब्लाक हो जाने पर लाखों रुपये ऑप्रेशन में खर्च करने पड़ते हैं परंतु अब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परमपिता परमात्मा शिव द्वारा (साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा द्वारा) सिखाये गये सहज राजयोग और जीवन शैली में परिवर्तन जैसे कि व्यायाम, संतुलित भोजन, सकारात्मक चिन्तन आदि द्वारा ब्लाकेज संपूर्ण नियंत्रित एवं प्राय: समाप्त किये जाते हैं।

बिना शल्य चिकित्सा के शल्य चिकित्सा

बात अधिक पुरानी नहीं जब मुझे दिल के दौर पड़ने शुरू हुए तो मेरी लौकिक बिटिया की ससुराल से आमंत्रण हुआ कि अहमदाबाद में अच्छे चिकित्सालय और डॉक्टर हैं जो सफलतापूर्वक इलाज कर सकते हैं। अहमदाबाद के एक अच्छे हॉस्पिटल में मेरी एंजियोग्राफी कराई गई। रिपोर्ट में दो धमनियाँ लगभग पूर्णरूपेण तथा एक अन्य धमनी 50 प्रतिशत ब्लॉक पाई गई। रिपोर्ट आने के बाद तुरंत ही ऑप्रेशन की सलाह दे दी गई। मेरी बेटी के ससुर भ्राता महेश गुप्ता जी, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अहमदाबाद केन्द्र से जुड़े हैं। उनकी प्रेरणा से ब्रह्माकुमारीज़ केन्द्र पर जाने और साप्ताहिक कोर्स करने तथा ईश्वरीय महावाक्य सुनने का अवसर मिला। इन्होंने हमें यह भी बताया कि माउंट आबू में डॉ.सतीश गुप्ता द्वारा दिल के मरीज़ों के लिए शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अंत:करण से आवाज़ आई कि क्यों न एक बार यह शिविर भी देख लिया जाये। अत: टूटा दिल लेकर 19 नवंबर, 2011 को हम अहमदाबाद की निमित्त बहन कृपा जी के कृपा पत्र द्वारा पहुँच गये दिलवाले के घर। वहाँ का पवित्र और प्रदूषणमुक्त वातावरण, भाई-बहनों का स्नेह देखकर अपार प्रसन्नता हुई। डॉ. सतीश गुप्ता द्वारा हम दिल के 45 मरीज़ों की बिना शल्य चिकित्सा के शल्य चिकित्सा आरंभ हो गई।

अद्‌भुत कार्यक्रम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सन् 1991 में स्थापित ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर द्वारा हृदयाघात के संकट का सामना करने के लिए एक अद्‌भुत, सहज, व्यवहारिक, स्वस्थ एवं खुशनुमा जीवन पद्धति कार्यक्रम विकसित किया गया है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम के समर्थन से डॉ.बी.के.सतीश गुप्ता द्वारा शारीर क्रिया विज्ञानी, एण्डोक्राइनोलॉजिस्ट, कार्डियोलॉजिस्ट, आध्यात्मिक विशेषज्ञ, आहार विशेषज्ञ और फिटनेस विशेषज्ञ आदि के साथ मिलकर कार्य करने के उपरांत यह प्रोजेक्ट विकसित हुआ है। इसमें एन्जियोग्राफी कराये हुए मरीजों के ऊपर प्रयोग किया जाता है। इस प्रोजेक्ट के मुख्य बिन्दु हैं – स्वस्थ जीवन शैली एवं आत्मिक स्थिति में रहने की जीवन शैली। इस कार्यक्रम के तीन भाग हैं – पहला, तनावमुक्त

जीवन राजयोग द्वारा, दूसरा, मध्यम ऐरोबिक व्यायाम, तीसरा, कम वसा, अधिक रेशे वाला शाकाहारी भोजन आत्मिक रूप में स्थित होकर करना। अब तक मुझ जैसे हजारों दिल के मरीज इन शिविरों से लाभ उठा चुके हैं।

व्यस्त दिनचर्या

वहाँ की व्यस्त दिनचर्या की जानकारी पाठकों को देना चाहता हूँ। प्रात:काल की शुरूआत नींबू पानी के साथ की जाती थी, फिर तेज गति से सुबह टहलाया जाता था। इसी दौरान हमें 5 बादाम और 1 अखरोट भी खाने को दिया जाता था। नौ बजे नाश्ते में लगभग 50 ग्राम अंकुरित अन्न, 1 गिलास दूध और कभी पतला दलिया आदि शामिल होते थे। फिर 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक हमारे मन की सफाई की जाती थी (विकारों, अव्यवस्थित खानपान और दिनचर्या के कारण ही प्राय: दिल की बीमारी होती है)। इसी दौरान बीच में फल खाने को दिया जाता था। दोपहर के भोजन में प्रतिदिन अलग-अलग प्रकार की हरी सब्जियाँ, छिलकायुक्त दाल, गेहूँ, चना, जौ, सोयाबीन आदि मिले हुए आटे की रोटियाँ, चावल, छाछ आदि दिये जाते थे। सायंकाल से रात्रि 8 बजे तक फिर से हमारे मानसिक शुद्धिकरण के लिए विभिन्न प्रकार की क्लासेस कराई जाती थीं। रात्रि भोजन के बाद 9 बजे प्रवचन या वीडियो आदि दिखाने के बाद 10 बजे विश्राम के लिए जाते थे।

सहारा लेने वाला बना सहारा देने वाला

कहते हैं, भोजन और भजन अगर ठीक हैं तो शरीर स्वस्थ रहेगा ही। ऊपर बताई गई ऐसी दिनचर्या, भोजन की शुद्धि और योग साधना से हम सभी दिल के मरीज़ों को लाभ मिलना आरंभ हो गया। आरंभ में मैं आशंकित था कि पता नहीं क्या करायेंगे पर योग शिविर के बाद अब पूर्ण स्वस्थ महसूस करने लगा हूँ। गये थे तब सहारा देकर रेलगाड़ी में बिठाया था, आज वैद्यनाथ शिव भोलेनाथ के आशीर्वाद ने दूसरों को भी सहारा देने लायक बना दिया है। आबू रोड से लौटने के बाद हाथरस में स्थानीय सेवाकेन्द्र पर प्रात:काल का प्रवचन सुनने के लिए 3 किलोमीटर दूर पहुँच जाता हूँ। मैं भोलेनाथ दिलवाला बाबा के साथ-साथ परिजनों, बी.के.बहनों एवं भाइयों, डॉक्टर्स आदि का शुक्रगुज़ार हूँ जिनके सहयोग से यह सब संभव हुआ। अंत में उन सुधी पाठकों से, जो इस संगठन की गतिविधियों से नहीं जुड़े हैं, निवेदन करना चाहता हूँ कि नजदीकी सेवाकेन्द्र पर जाकर परमात्मा शिव के कर्त्तव्यों को जानें और शारीरिक बीमारियों और मानसिक क्लेशों से मुक्ति प्राप्त करें। ❖

जीवन का सार

ब्रह्माकुमार राजवीर, बड़ौत

बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को
सबको करो जी तुम प्यार, प्यार जीवन का सार है

ये ऐसा वो वैसा, बातें हैं ये जिस्मानी
हम एक बाप के बच्चे, रिश्ता अपना रूहानी
देह भान की मिट्टी में पलते विकार हैं
बड़े और छोटे को.........................

नफरत से तो बढ़ेगी नफरत, प्यार से प्यार बढ़ेगा
गुस्से से तो बढ़ेंगी दूरियाँ और अहंकार बढ़ेगा
जो मीठा है वो फूल है, कड़वा है तो खार है
बड़े और छोटे को.........................

जिसे ना जीत सके ताकत से, प्यार से उसे हराओ
जो पा न सके दौलत से, प्यार से उसको पाओ
प्यार में तुम आजमा लो, ताकत अपार है
बड़े और छोटे को.........................

सुख पॉज़िटिविटी का

● **ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, दिल्ली (मजलिस पार्क)**

दीवाली से एक सप्ताह पहले की घटना है। किसी अनिवार्य ईश्वरीय सेवार्थ नेपाल स्थित महेन्द्रनगर सेवाकेन्द्र पर जाना हुआ। सेवा संपन्न होने के दूसरे दिन मैं जब प्रात: अमृतवेले साढ़े तीन बजे उठी और कमरे से निकल रही थी तब न मालूम क्या हुआ, दहलीज़ में ही पाँव में कुछ अटका, हाथ में कुछ पकड़ में आया नहीं और धड़ाम से गिर गई। पक्के फर्श पर बड़े ज़ोर से सिर टकराया। बहुत अधिक आवाज़ हुआ। सभी बहनें भागकर आई। सिर में लगी चोट से खून बहने लगा।

'कभी भी कुछ भी हो सकता है..' सर्वप्रथम यही विचार मन में कौंधा। दो दिन पहले ही बाबा ने मुरली में कहा था, 'कभी भी कुछ भी हो सकता है..हम रेडी रहें'। यही ख्याल बार-बार आने लगा, देखो, कभी भी हो सकता है न..! अपनी चोट की तो परवाह ही नहीं थी। बहनों ने पट्टी की, हल्दी का दूध पिलाया। दर्दनिवारक गोली भी दी। शरीर इतना टूट चुका था कि उस समय चोट के असली स्थान को जानना मुमकिन नहीं था। बहनें मुझे सुलाने की कोशिश कर रही थीं।

'यहाँ बेड पर दर्द के मारे नींद तो आनी नहीं..क्यों नहीं हॉल में जाकर योग करूँ', यह विचार आया, जाने को उठी, यह भूल गई कि दर्द के कारण जा नहीं पाऊँगी।

'मुझे पकड़कर हॉल में ले चलो..योग करूँगी', मेरे ऐसा कहने पर बहनों ने मुझे सहारे से ले जाकर हॉल में बिठा दिया।

'बापदादा का हाथ मेरे सिर पर था और एकदम नज़दीक से मुझे दृष्टि दे रहे थे..', ऐसा प्रैक्टिकल में आभास हुआ। फिर अनेकानेक शक्ति-किरणें ज्योति किरणों के रूप में मेरे ऊपर चारों ओर से बिखरने लगीं। मैं एकदम तरोताज़ा हो गई। मेरे शरीर का दर्द छूमंतर हो गया जैसेकि कोई जादू की छड़ी घूम गई हो। कमाल है..तब से आज तक दर्द नहीं हुआ।

योग के पश्चात् आकर सो गई। फिर दस बजे मुझे अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर को आश्चर्य हुआ कि खून किस आधार पर रुका था। कहा, चोट बड़ी है, टांके लगेंगे। एनेस्थेसिया के इंजेक्शन के दर्द के समय मुझे यह संकल्प आ रहा था, 'मैं आत्मा हूँ, मेरी मोटर रिपेयर हो रही है।'

सेन्टर पर आकर बैठते ही सबने घेर लिया। मैं खुशी के मारे खिलखिला कर हँसने लगी। 'क्या हुआ..इतनी हँसी क्यों?' कई प्रश्नसूचक निगाहें मेरी ओर थीं। सबने समझा कि सिर की चोट से दिमाग को कुछ हो गया है। मैं बोली, चिंता मत कीजिए..मेरा दिमाग ठीक है। मैं इसलिए खुश हूँ कि मेरा सारा शरीर सही-सलामत है। मेरे 'हड्डु-गुड' नहीं टूटे। अगर मेरी कोई हड्डी टूट जाती तो प्लास्टर चढ़ता। मैं बच गई। सूली से कांटा हो गया। हिसाब-किताब भी चुक्तू हुआ और वह भी जैसे मक्खन से बाल निकलता है। वाह मेरा भाग्य! वाह बाबा! वाह रे मैं!

यह सकारात्मक सोच मुझे सुख दे रही थी। दिल्ली आने पर भी, सबने सिर पर पट्टी देखकर कारण पूछा। 'मैं नेपाल से टोपला पहनकर आई हूँ', मुख से यही निकला।

समस्या बड़ी तब बनती है जब उसकी चिन्ता बड़ी होती है। शरीर को कुछ हुआ तो क्या? मन तो सुमन रहे तो सुख ही सुख है। मन की सकारात्मकता का सुख तो लें, यह तो अपने हाथ में है।

'तेरी खुशी और ग़मों का कौन ज़िम्मेवार?

तेरे अपने ही संकल्पों का संसार'

वाह रे मैं! वाह मेरा बाबा! जिसने इतनी ऊँची सोच दी। प्यारे बाबा का जितना धन्यवाद करें, कम है। ❖

वायवा नहीं, वाह-वाह

● डॉ.सौरभ आर.पटेल, अहमदाबाद (नवरंगपुरा)

ज्ञानामृत के अगस्त 2011 अंक में 'मनसा सेवा' लेख पढ़ा जिसमें एक बीमा एजेंट का अनुभव था कि वो अपने हर ग्राहक के साथ जब मिलता तो पहले यही सोचता कि 'मैं आत्मा आपसे प्यार करता हूँ' फलरूप सभी ग्राहक उससे प्यार का अनुभव करते थे, कोई उसे मना नहीं कर पाता था। यह बात मेरे दिल को छू गई।

सकारात्मक चिन्तन के शुभ परिणामों के बारे में ज्ञानामृत के अन्य लेखों तथा राजयोग की कक्षाओं में भी कई प्रेरणादायी बातें सुनीं और मैंने उन सभी के सार को ग्रहण कर सकारात्मकता पर प्रयोग करने की ठान ली।

सकारात्मक चिंतन पर प्रयोग

मैंने अपनी लौकिक पढ़ाई बी.एस.सी. (सन् 2000) से पी.एच.डी. (सन् 2011) तक अहमदाबाद में ही की है। पी.एच.डी. कैमेस्ट्री का शोध प्रबंध 28 फरवरी, 2011 को प्रस्तुत कर चुका था। फाइनल वायवा बाकी था, उसी के सिलसिले में मैं अहमदाबाद आया हुआ था। सकारात्मक चिंतन का प्रयोग करने के लिए मैंने अपने परीक्षक, जो बाहर से आने वाले थे, का फोटो तथा जीवन परिचय वेबसाइट से निकाला और दिन में जब भी याद आये, उनकी फोटो को मन:पटल पर प्रत्यक्ष करके यही संकल्प करने लगा कि 'मैं आत्मा आपसे बहुत प्यार करता हूँ।' कम से कम दिन में तीन-चार बार तो पक्का सोचता रहा, साथ में यह भी सोचता रहा कि 'मुझसे जो भी पूछा जायेगा, वो मुझे आता है और वो मुझसे वो ही पूछेंगे जो मुझे आता है।'

साथ-साथ मैं पढ़ता भी रहा। पढ़ने में मैंने उन्हीं बातों पर ध्यान दिया जिनमें मेरी कमी थी। जो बातें पूरी तरह दिमाग में थीं, उन पर इतना ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे तो नींद से जगाने पर भी मुँह जबानी याद थीं।

स्वमानों का स्मरण

आस्था चैनल पर प्रसारित ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम से भी मैंने दो बातों का पालन करना शुरू कर दिया था। **उसमें कहा गया था कि सुबह उठते ही सोचें, आज मैं स्थिर, दृढ़ और नियंत्रण (संयम) में रहूँगा, मैं सभी स्थितियों को संभाल लूँगा और दूसरा, मेरे लिए सब कुछ यथार्थ, उत्तम और लाभप्रद ही होगा। इसी प्रकार बाबा के महावाक्यों में भी था, 'अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो जायेगा', 'बाबा को याद करते रहो, यह भी बहुत बड़ी सेवा है', 'याद के मंत्र द्वारा संकल्प और कर्म में अविनाशी**

सिद्धि प्राप्त करने वाले सिद्धि स्वरूप भव' तथा 'कर्म चेतना की बजाय आत्म-चेतना में रहो।' ऐसे अभ्यास करते-करते वायवा होने का दिन आ गया। उस दिन अमृतवेला विशेष स्वमान के साथ किया। मुझे सबसे अधिक प्रिय है यह स्वमान कि 'मैं सबसे अधिक भाग्यशाली हूँ, स्वयं भाग्यविधाता भगवान मेरा है।' इसके लिए चिंतन करता हूँ कि भगवान ने कहा है, मीठे बच्चे, तुम कहाँ पर भी हो, मेरी नज़र सदैव तुम्हारे ऊपर है, तुम्हारे जीवन की डोर भाग्यविधाता के हाथों में है।

मैं आपसे बहुत प्यार करता हूँ

बाबा को सब कुछ बता दिया। सुबह 6 बजे परीक्षक को स्टेशन से लेने के लिए मैं और मेरे गाइड दोनों पहुँचे। मैं फूलों का गुलदस्ता ले गया था, गुलदस्ता परीक्षक को भेंट करते हुए, दृष्टि देते हुए मैंने संकल्प किया, मैं आत्मा आपसे बहुत प्यार करता हूँ। फिर उन्हें हम होटल ले गये जहाँ

उनके ठहरने का प्रबंध किया गया था। बाद में मैं अपने हॉस्टल आ गया। हॉस्टल आकर मुरली पढ़ी जिसमें वरदान था 'अपनी असली पोजीशन में ठहरना, यही याद की यात्रा है। जब सुखदाता के बच्चे हैं तो दुख की लहर कैसे आ सकती है, सर्वशक्तिवान के बच्चे शक्तिहीन कैसे हो सकते हैं।'

रूहानी स्नेह की भासना

वायवा 12 बजे था, 12 बजे मैंने बाबा को कहा, चलो बाबा और अंदर जाकर परीक्षक के सामने बैठा, पहला संकल्प यही किया, मैं आत्मा आपसे बहुत प्यार करता हूँ। वे मुझे देखकर बहुत मुसकरा रही थी। मुझे तो ऐसा लग रहा था जैसे कि मैं उनका बेटा हूँ, जो बहुत सालों के बाद उन्हें मिला हूँ। मुझे रूहानी स्नेह वाली भासना आ रही थी। सच है, हम जो देते हैं वही हमें वापस मिलता है।

सकारात्मक टिप्पणी

ज्यादातर लौकिक परीक्षक कभी भी विद्यार्थी की प्रशंसा नहीं करते, न ही हँसकर बात करते हैं। वे तो उन बातों पर ध्यान देते हैं जो हमने नहीं किया हो या वे वही बातें पूछते हैं जो हमें नहीं आती हों। वे महसूस करवाते हैं कि आपको यह नहीं आता है। कुल मिलाकर उनका पूरा ही दृष्टिकोण नकारात्मक होता है। वे बोली, आपने बहुत अच्छा काम किया है। आपका Documentation, रेखांकन (graphs), विधि (methods), प्रस्तुतीकरण (presentation) व्यवस्थित और बहुत अच्छा है। यह मेरे काम के बारे में उनकी पहली टिप्पणी थी जिसने मुझे बहुत हलका कर दिया। फिर उन्होंने कहा, अपने शोध कार्य के बारे में संक्षिप्त में समझाओ। मैंने बोलना शुरू किया, जैसे बाबा मुझसे बुलवा रहा था। इतना बोलने लगा तो उन्होंने कहा, इतना गहराई में जाने की ज़रूरत नहीं है। फिर कुछ सकारात्मक टिप्पणी दी और वायवा खत्म हो गया। जब वायवा खत्म हुआ तब मुझे लगा, यह क्या? क्या सच में यही वायवा था? जिसको भी बताया, उसने यही कहा, वाह-वाह हो गया (वायवा हो गया)।

रात को जब मैं उन्हें वापिस स्टेशन छोड़ने गया तो उन्हें उपहार और दृष्टि देते हुए मन में यही कहा, मैं आत्मा आपसे बहुत प्यार करता हूँ। गिफ्ट लेते हुए उनकी आँखों में आँसू थे।

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा, बाबा हमारे लिए ही बैठा है। वो किसी ना किसी या कोई ना कोई रीति से हमें मदद अवश्य करता ही है, बस हमारी नज़र उस पर होनी चाहिए। हमारे हर संकल्प का वो उत्तर ज़रूर देता है, बस, अपनी आँखें खोले रखें, कान खुले रखें। मीठे बाबा, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें। ❖

तन-मन रहेगा हल्का

मनोज 'खुशनुमा', नोएडा

ना बीती का चिंतन हो, ना सोचें ज़्यादा कल का।
वर्तमान को सफल करें तो तन-मन रहेगा हल्का।।

सरल बनायें चिंतन को, जीवन नाम न उलझन का।
क्षमा करें और विस्मृत कर दें तो जीवन रहेगा हल्का।

नित उठ याद करें प्रभु को, समय सुहाना उस पल का।
गोदी में सर रखकर सोयें, हर बोझ रहेगा हल्का। ।

शिवबाबा से जोड़ें नाता-रिश्ता सच्चे दिल का।
दैहिक नातों के बंधन से मुक्त रहे मन हल्का।।

शुद्ध संकल्पों का भोजन, संग पावनता के जल का।
जग में रहना, जल में जैसे खिलता फूल कमल का।।

कर्म करें योगी बनकर, संकल्प रखें ना फल का।
हार-जीत, महिमा-निंदा, उपराम रहे मन हल्का।।

एक भरोसा, एक सहारा शिवबाबा के बल का।
एक लगन में रहें मगन हर विघ्न लगेगा हल्का।।

प्रभु-प्रेम में खो जायें ना भान रहे हलचल का।
बनें फरिश्ता उड़ जाएँ, जैसे है बादल हल्का।।

ना बीती का चिंतन हो ना सोचें ज्यादा कल का।
वर्तमान को सफल करें तो तन-मन रहेगा हल्का।।

ईश्वर की खोज

● ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फ़रनगर

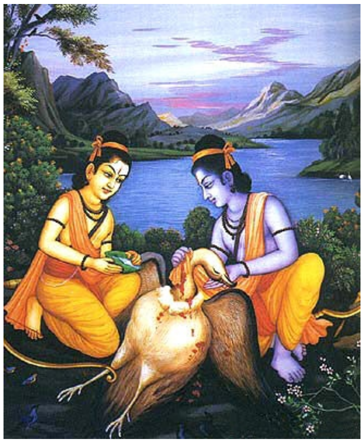

वैज्ञानिक आइन्स्टीन एक सहयोगी के साथ शोध कार्य में लगे थे। सात सौ प्रयोगों के बाद भी जब सफलता नहीं मिली तो सहयोगी ने हताश हो कर प्रयोग बन्द करने को कहा। आइन्सटीन ने कहा कि हम विफल नहीं हुए हैं, हमने 700 दिशाओं में खोज की है और अब जो बहुत कम दिशाएं (विकल्प) बची हैं, सफलता उन्हीं में से किसी एक में है अन्ततः सफलता मिल ही गई।

जीवनदाता है ज़रूर

कहा जाता है कि पीपल के वृक्ष पर फूल खिलते हुए देखा नहीं गया है लेकिन पीपल पर लगे फल यह बताते हैं कि अति सूक्ष्म फूल भी ज़रूर खिला था। तो इस सृष्टि में अनादि समय से पल रहा जीवन यह बतलाता है कि कोई जीवनदाता भी है ज़रूर। **यह इस युग की सबसे बड़ी खबर है कि वह जीवनदाता, भाग्यविधाता, परमपिता-परमात्मा शिव स्वयं अपने बच्चों को आकर कह रहे हैं कि 'लो, मैं आ गया, मेरे बारे में मेरे द्वारा ही जानो, मेरे से जितना भाग्य लेना चाहो ले लो, मेरे से पूरे कल्प के 84 जन्मों के राज़ समझ लो, मेरे से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कर लो' आदि-आदि।**

प्रभु की गोद में सब प्राप्ति

यादगार शास्त्र रामायण में प्रसंग है कि दण्डकारण्य में श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण जब सीताजी की खोज में भटक रहे थे, तो उन्हें घायल जटायु मिला। जटायु ने उन्हें बतलाया कि रावण से सीता को छुड़ाने का उसने प्रयास किया था परन्तु पंख कट जाने के बाद वह लाचार हो गया। जटायु को श्रीरामचन्द्र ने गोद में लिटा लिया। श्रीराम को जटायु के ऊपर बड़ा प्यार आया, फिर कहा, मुझसे कुछ मांग। जटायु ने कहा कि प्रभु! आपके पास मुझे देने को कुछ है ही नहीं। श्रीराम ने कहा, जटायु, आज यदि तुम जीवनदान भी मांगोगे, मैं तुम्हें वह भी दूंगा। जटायु ने पुनः कहा कि प्रभु आप मुझे सब तो दे चुके हो, और अब आपके पास मुझे देने को बचा क्या है, इसलिए मैं आपसे कुछ नहीं मांगता। इस पर लक्ष्मण क्रोधित हो उठे और बोले कि हो तो तुम पक्षी ही। तुम्हारी क्षुद्र पक्षी-बुद्धि कितनी संकुचित है कि तुम भगवान से यह कह रहे हो कि आपके पास देने को कुछ भी नहीं है। जटायु ने लक्ष्मण से कहा कि जब किसी सेठ के यहां पुत्र पैदा होता है और वह मिठाइयां बांटता है तो उस शिशु को मिठाई नहीं खिलाता परन्तु फिर भी उस सेठ की सारी सम्पदा किसे स्वतः प्राप्त होती है ? लक्ष्मण ने कहा कि वह तो उसके पुत्र को ही मिलेगी। अब जटायु ने समझाया कि जब मैं अपने पिता की गोद में लेटा हूँ, तो इनका सब कुछ तो मुझे मिल ही गया, अब इनके पास अलग से कुछ और देने को बचा है क्या ! तो यह जटायु की मात्र भक्तिभावना ही नहीं थी बल्कि निकटतम सम्बन्ध की महसूसता भी थी जिसने उसे श्रीराम का पुत्र होने का अनुभव कराया।

न्यूनतम आवश्यकता निकटतम संबंध

भक्ति ऐसी होनी चाहिये जो इष्टदेव से पिता-पुत्र का सम्बन्ध जोड़े, ना कि मात्र दाता व याचक का निम्नतर सम्बन्ध हो। शिव परमात्मा हैं जिनकी आवश्यकता पूरे कल्प में मात्र एक है और वह है कलियुग के अन्त में किसी एक अनुभवी वृद्ध के साकार शरीर की ताकि उसमें बैठ कर वह अपने बच्चों से सम्बन्ध जोड़ सके, उन्हें पतित से पावन बना सके। परन्तु आवश्यकताओं से घिरे मनुष्य उनके निकट नहीं आ पाते। आप इतिहास पर नज़र डालें तो पायेंगे कि जिसने भी

साधना के पथ पर बढ़ते हुए अपनी आवश्यकताएं न्यूनतम कर दीं, उसने ही परमपिता की निकटता का अनुभव कर लिया।

'ईश्वर' भी तो नाम ही है

ईश्वर का यदि अनुभव नहीं होता है, तो उसे सर्वव्यापी कह दिया जाता है। सर्वव्यापी अर्थात् अनुभवातीत। अनुभवातीत अर्थात् नाम-रूप से परे। यदि पूछा जाए कि कौन है नाम-रूप से परे ? तो उत्तर मिलता है 'ईश्वर'। तो यह 'ईश्वर' भी तो एक नाम ही है, फिर यह जिसका नाम है, वह भी कहीं अपना एक निज-अस्तित्व तो रखता होगा ना ! अब उसके निजी अस्तित्व को अपने निजी अस्तित्व द्वारा जानना, समझना व अनुभव करना क्यों नहीं संभव हो सकता ? और यदि वह ईश्वर है, तो ज़रूर सर्वसमर्थ, प्रतिभावान व सर्व का परमपिता होगा। उसे भी यह जरूर पता होगा कि मेरे बच्चे बगैर मेरी मदद के मुझसे सम्पर्क नहीं कर सकते, मुझे ढूँढ नहीं सकते। तो वह युक्ति से अपने निजी अस्तित्व को कुछ भाग्यशाली मनुष्यों को अनुभव ज़रूर करायेगा क्योंकि यदि उसने पहले कभी अनुभव कराया ही नहीं होता, तो ईश्वर शब्द और उसके निराकारी स्वरूप की कभी चर्चा ही नहीं हुई होती।

मैं परमपिता के काम आऊँ

ईश्वर के प्रति आज मनुष्यों की भावना बड़ी प्रबल है परन्तु उन भावनाओं के पीछे खड़ा भाव बड़ा ओछा है। भाव यही रहता है कि ईश्वर मेरे काम आए। परन्तु संसार में मनुष्य एक-दूसरे के काम आते हैं सम्बन्धों के आधार पर। सम्बन्ध चाहे पड़ोसी का हो, चाहे मित्रता का हो, चाहे पद का हो इत्यादि। सम्बन्ध हमेशा दोनों तरफ से आदान-प्रदान पर आधारित होता है, एक-तरफा कभी नहीं। परन्तु ईश्वर से 'एक-तरफा' सम्बन्ध इसलिए बनाना चाहते हैं ताकि उससे अपने काम निकलवा सकें, तो ऐसे स्वार्थी व्यक्ति को वह परमपिता कैसे पसन्द कर सकते हैं ? होना तो यह चाहिए कि मैं उस परमपिता के काम आऊं। समाज में भी एक श्रेष्ठ पुत्र की यही कामना रहती है कि मैं अपने पिता के बुढ़ापे में काम आऊं। तो उस परमपिता शिव के युग-परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनना उसके काम आना है।

सभी अनाथ-प्राय: हैं

यदि किसी नि:सन्तान दम्पत्ति को बच्चा गोद लेना हो, तो इसके लिए वह काफी प्रयासरत रहते हैं और अनेक बच्चों में से अनुकूल बच्चे की खोज करते हैं। फिर उस बच्चे को परिवार व समाज द्वारा उस युगल का दत्तक-पुत्र स्वीकार कर लिया जाता है। यह कभी नहीं देखा जाता कि एक अनाथ बच्चे ने किसी युगल की खोज करके उन्हें अपना माता-पिता स्वीकारा हो। कारण है कि अनाथ दया का पात्र 'बेचारा' होता है। उसके पास कोई 'चारा' या विकल्प नहीं होता। उसकी तो हालत एक भिखारी जैसी होती है और समाज में भिखारी को कोई 'हक' प्राप्त नहीं होता। परन्तु आज संसार में मनुष्य अपने परमपिता के यथार्थ परिचय व स्वरूप को ना जानने के कारण 'अनाथ-प्राय:' हैं। चूंकि सभी अनाथ हैं अत: उन्हें अनाथ होने का कोई गम या दुख नहीं है क्योंकि दुख होता ही है दूसरे के सुख को देख कर। जैसे कि यदि किसी गांव में सारे ही काने हों तो किसी को भी अपने काना होने का दुख नहीं होगा।

आज अज्ञानतावश अनेक 'इष्टदेव' भगवान के रूप में पूजे जा रहे हैं। 'इष्ट' अर्थात् 'अभिलाषित', 'वांछित'। चूंकि सबकी अभिलाषाओं में फर्क रहता है अत: उनके इष्टदेव भी भिन्न-भिन्न होते हैं।

पिता ढूँढ सकता है बच्चों को

एक आम व्यक्ति ब्रह्माकुमार-कुमारियों में रूहानी नशा देख कर आकर्षित होता है और महसूस करता है कि शायद इन्होंने 'ईश्वर की खोज' कर ली है परन्तु उसे पता नहीं होता कि ब्रह्माकुमार-कुमारियां तो 'ईश्वर की खोज' हैं, उन्हें स्वयं शिव ने ढूँढ कर निकाला है, अपना बनाया है। कायदा भी यही है कि पिता, पुत्र को पैदा करे, न कि पुत्र, पिता को। और यदि पिता के नाम रूप, देश, काल, गुण व कर्त्तव्यों आदि का पता न हो, तो फिर

उसे ढूँढना संभव नहीं। ऐसे में तो वही अपने बच्चों को ढूँढ सकता है।

आज ईश्वर पर अविश्वास करने वाले को नास्तिक कहा जाता है परन्तु हालात ऐसे हैं कि वर्तमान समय मनुष्य अपने पर ही विश्वास नहीं कर पा रहे हैं अन्यथा दूसरे मनुष्यों या गुरुओं आदि को वे अपनी सद्‌गति का ठेका न देते। जिसे अपने ऊपर ही विश्वास नहीं वह भला आस्तिक कैसे हो सकता है। वह ईश्वर पर कैसे यकीन कर सकता है ? वह तो डबल नास्तिक है, स्वयं के प्रति भी और ईश्वर के प्रति भी। शिव-प्रदत्त आध्यात्मिक ज्ञान ही मनुष्य को डबल आस्तिक बना सकता है।

ईश्वर है अनुभव की जाने वाली सत्ता

आज मनुष्य ऐसी बातें करते हैं, मानो वे ईश्वर में विश्वास करते हैं लेकिन जीते इस प्रकार से हैं मानो ईश्वर है ही नहीं। जैसे एक नेता चुनाव से पहले नोट बांटता है व सुनहरे वायदे करता है परन्तु जीतने के बाद सबको भूल जाता है। उसी प्रकार, एक भक्त भी मन्दिर में ईश्वर से किए गये वायदों को, काम निकल जाने के बाद भुला देता है। वह कुछ रुपयों का प्रसाद चढ़ा कर अपना फ़र्ज़ पूरा कर लेता है। यदि वह ईश्वर में 'निश्चय' रखे, व उससे सर्व सम्बन्ध कायम कर ले, तो उसका ईश्वर उसकी बातों से निकल कर उसके कर्म में आ जाये। ईश्वर है ही सम्बन्ध व कर्म से अनुभव की जाने वाली सत्ता। सर्व-इच्छाओं से परे जा कर ही ईश्वर से सर्व-सम्बन्धों का अनुभव किया जा सकता है।

अमूल्य धारणाओं का अचूक नुस्खा

जैसे किसी रोगी के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए दवाई, शक्ति तथा परहेज, इन तीनों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार, परमपिता शिव भी मनोविकारों के भीषण रोग को जड़ से खत्म करने के लिए सहज ज्ञान रूपी औषधि, सहज योग रूपी शक्ति और अन्नदोष व संगदोष से बचाव रूपी परहेज, इन तीन अमूल्य धारणाओं का अचूक नुस्खा देते हैं। जैसे घर में यदि आधी रात को बच्चा बीमार हो जाये, तो पिता ही डाक्टर की तरह उसका प्राथमिक इलाज करता है, उसी प्रकार, शिवपिता भी कलियुगी रात्रि में अपने बच्चों का रूहानी इलाज एक रूहानी डाक्टर के रूप में कर रहे हैं। तो आइये, स्वयं परमपिता शिव से पिता-पुत्र का सम्बन्ध जोड़ें और सर्व चिन्ताओं व समस्याओं से मुक्त हो कर 'ईश्वरीय-रूहानी-इलाज' का लाभ लें। ❖

अंतिम परीक्षा

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

सेठ दीनानाथ बड़े दानी थे, उनका दानी स्वभाव दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। एक दिन जब वे आराम कर रहे थे, एक भूखे ने भोजन के लिए याचना की। सेठ ने उसे अंदर बुलाया और नौकरों को कहकर स्वादिष्ट भोजन से उसे तृप्त किया।

वह भूखा वास्तव में यमदूत था, उस सेठ को लेने आया था। सेठ को पता चला तो बहुत घबरा गया। यमदूत ने उसकी दया से प्रभावित होकर उसे मनुष्यों के भाग्य की पुस्तक पकड़ा दी और कहा, 5 मिनट के अंदर अपने वाले पन्ने में जो बदलाव चाहो, कर लो। सेठ ने अपना पन्ना खोला, अपने कर्म सामने आये तभी पड़ोसी के कर्मों पर नज़र पड़ गई तो क्रोध और ईर्ष्या से भर गया और सोचा, ये इतने अच्छे कर्मों के हकदार नहीं हैं। फिर उनके पन्ने को खूब बिगाड़ दिया। जब अपने वाले में कुछ लिखने लगा तो 5 मिनट पूरे हो चुके थे। वह अपना भाग्य नहीं संवार पाया, अगले ही पल मौत उसे ले गई।

कहानी का सुंदर संदेश यही है कि औरों का बिगाड़ने में जो समय लगाते हैं, उसे अपना संवारने में लगायें, नहीं तो अपने लिए समय नहीं बचेगा। दानी सेठ अंतिम परीक्षा में फेल हो गया। धन का दान अच्छा है पर मन को शुद्ध संकल्पों से भरपूर रखना उससे भी अच्छा है। सेठ को तो 5 मिनट मिले, हमें तो सेकंड की स्थिति द्वारा पेपर हल करना है इसलिए बापदादा कहते हैं, अभी से प्रैक्टिस करो जो मन एक सेकंड में मनचाही स्थिति में स्थित हो जाये। ❖

सत्यों का रहस्योद्‌घाटन

● ब्रह्माकुमारी गीता, शान्तिवन

संसार की सभी व्यवस्थाओं का कोई मुखिया या नियंत्रक होता है जो उस व्यवस्था की देखरेख करता रहता है और आखिर उसे ठीक करता है। संसार की प्राकृतिक, सामाजिक, पारिवारिक व्यवस्थाओं का मुखिया तो हम देखते हैं और जानते हैं लेकिन संसार का मुखिया कौन है जो संसार को पुन: बनाने का कार्य करता है? उस जगतनियंता को ही परमशक्ति परमात्मा कहते हैं। हर व्यवस्था के मूल और मुख्य को ही मूलभूत बातों का पता होता है, अन्य सभी तो उस विषय की अनुमानित बात ही बतायेंगे। अब तक जगतनियति के विभिन्न पहलुओं पर जिन्होंने प्रकाश डाला वो अनुमानित ही था या तो कहें यथा चिंतन/साधना ही था। वह पूर्ण सत्य नहीं था इसलिए सर्वस्वीकृत नहीं हुआ। अनेक मतें हुई अत: आज तक सूत उलझा हुआ ही रहा।

खुद आते हैं खुदा

यथार्थ सत्य की अपनी एक शक्ति होती है जो अभ्यास में आते ही अनुभव होती है और ठोस परिणाम निकालकर देती है। अब तक मानव मन के, जनजीवन के, समाज-संसार के रोग, शोक, दुख-दर्द, विकार-विकृति खत्म नहीं हुए हैं, इतने विभिन्न मतों, प्रयोगों, प्रयासों को आज़माने के बावजूद भी। इसका मतलब तो यही हुआ कि अब तक हमने जीवन या जगत की व्यवस्था को ठीक करने हेतु जो कुछ किया वो ठोस सत्य पर आधारित नहीं था। जगतनियति के सत्यों का स्पष्टीकरण जगतनियंत्रक परमात्मा ही करते हैं। इसके लिए वे खुद आते हैं तब तो खुदा कहे जाते हैं।

सनातन सत्यों का ज्ञान परमात्मा द्वारा

इंसान स्वयं कभी भी स्वयं के बारे में सत्य तलाश नहीं सकता है। जीवन और जगत के सभी सनातन सत्यों का ज्ञान परमसत्य परमात्मा आकर बताते हैं। तभी तो उनके सृष्टि पर अवतरण की बातें कही गई हैं। यदि मनुष्य खुद साधारण आत्मा के रूप में या महात्मा, धर्मात्मा, पुण्यात्मा या देवात्मा के रूप में सत्य तलाश सकता तो फिर परमात्मा के अवतरित होने की क्या आवश्यकता रहती? सत्य का प्रकाश परम सत्य परमात्मा ही फैलाते हैं। इसलिए ही हम उसे अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से परमसत्य की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने वाला कहते हैं। यह अनुभूति हर आत्मा ने की है, वह अनुभूति उसमें गहराई से समाई हुई है तब हम ईश्वर को सर्वज्ञ, ज्ञानसागर कहते हैं वर्ना हमने कैसे जाना कि परमात्मा ज्ञान का सागर है।

आखिरी फैसला ईश्वर का

मान लेना अलग बात है, सचमुच सत्य होना अलग बात है। हम कह सकते हैं कि न धर्म पूर्ण सत्य बताता है, न विज्ञान पूर्ण सत्य बताता है क्योंकि दोनों मानव मन की उपज हैं और दोनों निरंतर प्रयासरत हैं। इसलिए आखिरी फैसला ईश्वर पर छोड़ा जाता है। वो ही पूर्ण न्याय कर सकता है। असत्य का अंधेरा जब घना हो जाता है, सत्य की तनिक भी किरण नज़र नहीं आती, सत्य नामशेष रह जाता है तब परमात्मा का सूर्योदय होता है और यही वो समय है जो परमात्मा आकर सत्यज्ञान देकर सबकी सद्‌गति कर रहे हैं। ❖

बनेंगे रूहानी नूर

शिव का भण्डारा भरपूर,
काल कंटक सब दूर
बाबा ने बनाया नैनों का नूर।
ज्ञान से बनें हम भरपूर।
अब नज़दीक लाओ जो हो गये दूर
ना देखो किसी की भूल
इनका नहीं कोई कसूर
करो सदा भगवान के सामने जी हजूर
है आपको ये मंजूर ?
फिर आप बनेंगे रूहानी नूर
और करेंगे सबके दुख दूर

– ब्रह्माकुमारी हंसा, शान्तिवन

अलौकिक पिता मिल गया

● सुरेश शुक्ला, खानपुर, नई दिल्ली

जब मैंने आठवीं कक्षा में नाम लिखवाया तभी लौकिक पिता का देहांत हो गया। उसके बाद का जीवन संघर्षमय हो गया। मेहनत-मजदूरी करके बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद, धक्के खाने के बाद भी कैरियर में सफलता प्राप्त नहीं हुई। लौकिक रिश्ते भी दूर होते चले गये। फिर भी किसी तरह जीवन से जूझते रहे। दूसरा बड़ा झटका तब लगा जब सन् 1994 में लौकिक माताजी का भी देहांत हो गया।

जीवन में थी अशान्ति

इसके बाद जीवन की दिशा बदल गई। गलत संग व राजनैतिक लोगों के साथ रहकर जीवन और नर्क बन गया लेकिन इस नर्क में भी स्वर्ग का आनंद महसूस होता था क्योंकि असली स्वर्ग का पता ही नहीं था। शराब, सिगरेट, तंबाकू व कई गंदे शौक पैदा हो गये। खुद को अनाथ समझता रहता था। किसी की कोई बात मानता ही नहीं था लेकिन भगवान से डर लगता था। आवारा लोगों के साथ रहना, मारपीट करना, धमकाना – ये सब नेतागिरी में सद्‌गुण कहलाते हैं, ये सब मुझमें थे। थाने, पुलिस आदि से डर नहीं लगता था क्योंकि ये सब नेता लोग संभाल लेते थे। आवारागर्दी चरम सीमा पर पहुँचने के बाद राजनीति से भी मन उचट गया। फिर तो अशांति ही अशांति जीवन में थी।

ज्ञान आने से भागता है अज्ञान

हमारी लौकिक बहन कई वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा में जाती रहती थी। उन्होंने कई बार हमें भी सात दिवसीय कोर्स करने को कहा लेकिन हम यह कहकर बात उड़ा देते थे कि बहन जी, हम तो सर्वगुण संपन्न हैं ही, हमें और किसी गुण की आवश्यकता ही नहीं है। उल्टा हम ओम् शान्ति वालों का मजाक उड़ाते थे कि बुढ़ापे में आप लोगों का सब नाटक फेल हो जायेगा, जब शरीर में ताकत समाप्त हो जायेगी तब यह ढोंग विद्या कैसे चलेगी।

लौकिक बहन जी फिर भी समझाती रही। एक बार शिव जयंती पर सेन्टर की बहनें लौकिक बहन जी के घर झंडा लगाने आई और मौका देखकर लौकिक बहन ने सेन्टर की बहन से कहा कि भइया से कहो, कोर्स करें। बहन जी ने हमसे कहा, भाई जी, आप कोर्स कर लो। हमने कहा, बहन जी, हम तो गंदी राजनीति में सर्वगुणसंपन्न हैं। हमारे कर्म इतने काले हैं कि साबुन भी काला हो जायेगा। कम से कम हम आधे अवगुण खत्म कर लें, फिर आपके

सेन्टर पर आयेंगे। बहन जी ने कहा, भाई जी सेन्टर पर आओ, हम आपके सभी अवगुण निकाल देंगे। हमने कहा, बहन जी, आपके पास कौन-सी मशीन है जो साफ कर देगी।

बहन जी ने कहा, भाई जी, बाल्टी में कीचड़ भरकर नल के नीचे रख दो तो बाल्टी में साफ पानी आता रहेगा और कीचड़ जाता रहेगा। कुछ समय बाद साफ पानी ही रह जायेगा। यह बात हमारे दिमाग में बैठ गई और अगले दिन से हमारा साप्ताहिक कोर्स शुरू हो गया। कोर्स में बताया तो बहुत कुछ गया लेकिन यही बात समझ में आई कि ज्ञान अंदर आता रहेगा, अज्ञान भागता रहेगा।

यहीं से मेरा नया जन्म हो गया। हम जो राक्षसी खान-पान वाला जीवन जी रहे थे, एकदम सब छूट गया। अपने को अनाथ समझते थे, पर अब जन्म-जन्म का अलौकिक पिता शिवबाबा मिल गया। जीवन धन्य-धन्य हो गया।

अब जीवन का शिवबाबा ही सहारा है। यह सत्य ज्ञान परमात्मा के सिवाय कोई दे ही नहीं सकता। मेरा आप सभी बहन-भाइयों से अनुरोध है कि आप सब भी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय की शाखा पर आयें और जीवन को नर्क से स्वर्ग की ओर ले जाने वाले शिवबाबा को पायें। ❖

प्रभु ने रखा ध्यान

● **ब्रह्माकुमार सीताराम, सहारनपुर**

बात जून, 2009 की है। मुझे 11 बजकर 20 मिनट पर ट्रेन पकड़नी थी। मैं बाबा के गीतों की कैसेट बजा रहा था। एक गीत,

'इस जग से अलग रह कर रूहो
उस रब से रूहरिहान करो,
जो ध्यान तुम्हारा रखता है,
उसका भी तुम कुछ ध्यान करो'

मुझे इतना अच्छा लगा कि इसे दो बार बजा लिया। गीतों में इतना मगन हुआ कि समय का पता नहीं रहा। घड़ी देखी तो 11 बजे थे। मुझे अपने निवास से स्टेशन तक पैदल पहुँचने में लगभग 30 मिनट लगते हैं। पाँच मिनट टिकट खरीदने के लिए भी चाहिएँ। कुल मिलाकर लगभग 15 मिनट लेट हो गया इसलिए लगा कि गाड़ी मिलनी कठिन है। फिर बाबा के महावाक्य याद आये कि बच्चे, पुरुषार्थ करो। ट्रेन में पढ़ने के लिए 'ज्ञानामृत' रोल करके पैंट की जेब में रखी और यह सोचकर चल पड़ा कि शिव मंदिर पर रिक्शा मिल जायेगा पर वहाँ रिक्शा नहीं मिला। निराश होकर चल पड़ा स्पीड बढ़ाकर, वही गीत गुनगुनाता हुआ, 'जो ध्यान तुम्हारा रखता है...'।

अजनबी आया मदद के लिए

थोड़ी ही दूर चला था कि किसी ने पीछे से आकर मेरे सामने अपनी साइकिल खड़ी कर दी। संकल्प आया, कोई परिचित (मित्र आदि) मजाक कर रहा है। लो अब देर में और देर हो जायेगी। उत्सुकतावश अजनबी को पहचानने की कोशिश करने लगा। इतने में वह अजनबी युवक बोल उठा, बैठो। मैंने कहा, भाई, मैं तो आपको जानता नहीं। अजनबी ने कहा, जानता तो मैं भी नहीं आपको पर लगता है, आपको गाड़ी पकड़ने की जल्दी है, बैठ जाओ। मैं धन्यवाद कहते हुए बैठ गया। अजनबी युवक ने मुझे समय पर स्टेशन पहुँचा दिया। मेरे मुँह से निकल पड़ा, 'वाह बाबा वाह, आपने मेरा इतना ध्यान रखा कि मदद के लिए एक अजनबी को भेज दिया।'

मैं योगयुक्त हो गया

भीड़ के कारण बड़ी मुश्किल से गाड़ी में चढ़ सका। सीट का तो सवाल ही नहीं। औरों की तरह मैं भी खड़ा हो गया। एक घंटे का सफर, संकल्प आया, योगयुक्त हो जाओ तो समय का पता नहीं चलेगा और मैं योगयुक्त हो गया। एक स्टेशन पास हुआ था कि मैंने देखा, एक भाई हाथ के इशारे से मुझे अपने पास बुला रहा था। मैं पहुँच गया। उस भाई ने अपनी युगल से कहा, जरा सरको, लड़के को भी सरकाया। तीन सीट वाली बर्थ पर मुझे एडजस्ट करते हुए बोला, मैं बहुत देर से देख रहा था कि एक ओमशान्ति वाला भाई चुपचाप खड़ा है। इधर-उधर भी नहीं देख रहा है। मैंने उनको धन्यवाद देते हुए कहा, आप भली आत्मा हैं। भाई ने कहा, मैंने टीवी पर शिवानी बहन को सुना है, अच्छी वक्ता हैं पर मेरे कुछ प्रश्न हैं।

बाबा की श्रीमत अनुसार मैंने भाई की शंका का समाधान करके उससे सात दिन का कोर्स करने का वादा ले लिया। ज्ञानामृत उन्हें दे मैं अपने गंतव्य पर उतर गया। मैंने फिर बाबा को धन्यवाद किया। बाबा ने मेरा फिर ध्यान रखा इतनी भीड़ में मुझे सीट दिलाकर। बाबा ने इस बार सहायता के लिए बैज को निमित्त बना दिया। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org